मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • पूर्ण अंक २१४ • अंक मई-२०२५
Volume no. 18, Issue No. 214 May 2025

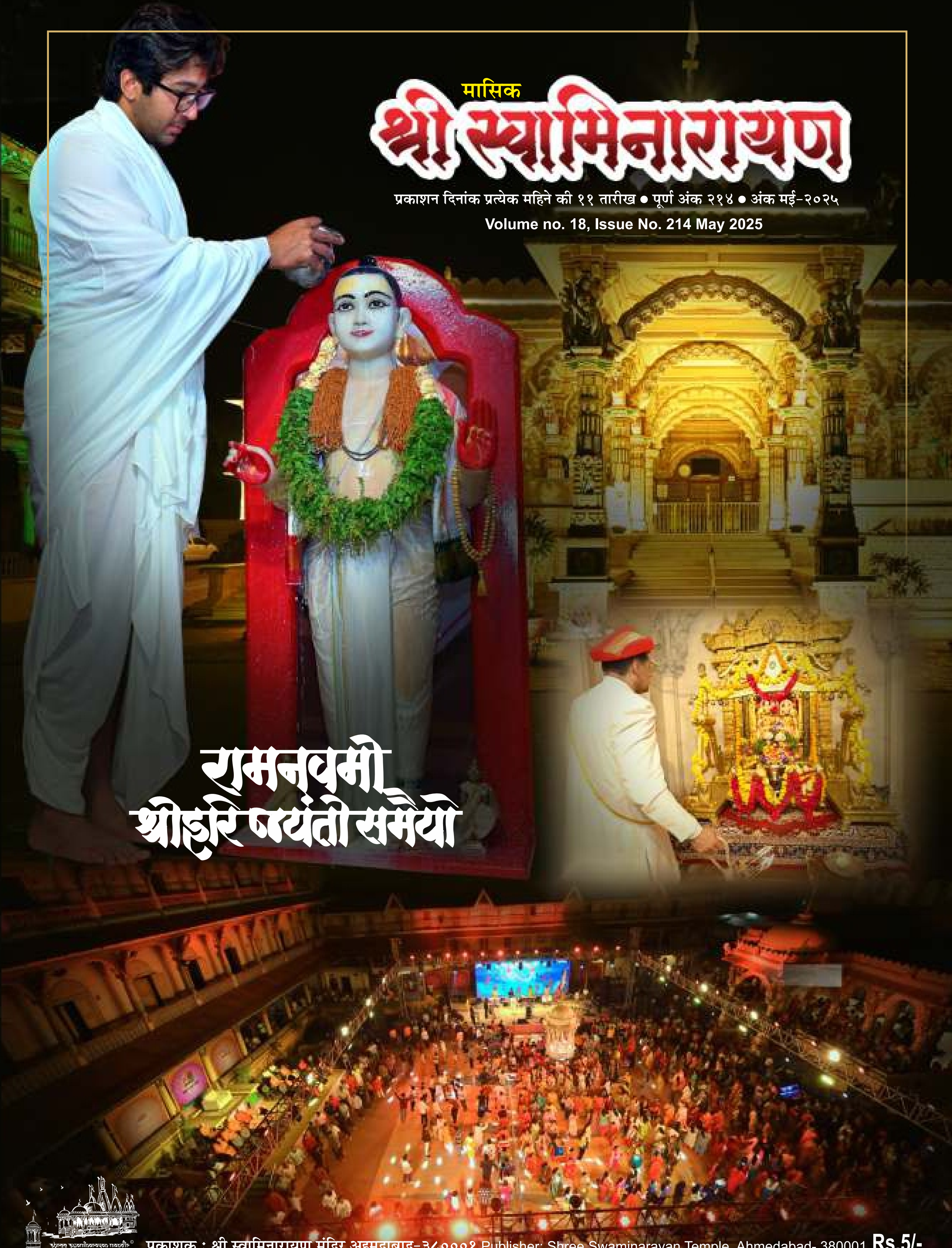

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-

अहमदाबाद मंदिर में रामनवमी को श्रीहरि प्रागटोत्सव की आरती उतारते प.पू. लालजी महाराजश्री तथा सभा मंडप में अखंड धून करते संत-हरिभक्त

अहमदाबाद (शांतिग्राम) अदाणी में अद्वितीय नूतन मंदिर का संतो सहित निरीक्षण करते प.पू. महाराजश्री ।

श्री हनुमान जयंती (पूनम) अहमदाबाद मंदिर में श्री हनुमानजी और श्री गणपतिजी का सिंहासन में पुन प्राणप्रतिष्ठा करते और प्रत्येक पूनम को होने वाली सत्संग सभा में दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।

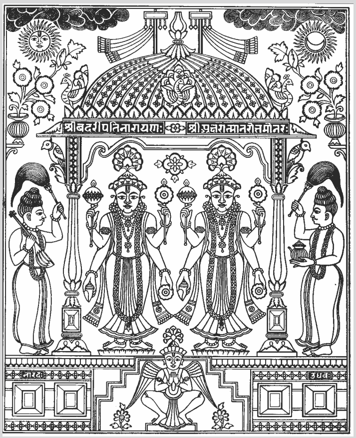

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० • प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १८ • अंक : २१४ • मई-२०२५

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री,
प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. ''समैयो'' के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री ०६

०४. श्रीहरि के ६वे और ७वे वंशज के मुख से अमृतवचन ०८

०५. गोरसिया सेवा फाउन्डेशन १३

०६. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से २१

०७. भक्ति सुधा २२

०८. ''समैयो'' के उपलक्ष्य में २४

०९. सत्संग समाचार २६

अस्मदीयम्

प्रिय भक्तो,

हम सभी को सुखी होना है । दुःख किसी को भी अच्छा नही लगता है । हम लोगो के सुख हेतु महाराजने सोचकर 'शिक्षापत्री' लिखे है । जो मनुष्य सदाचार का पालन करता है । वह इस लोक तथा परलोक में सुखप्राप्त करता है । बडा सुख अर्थात् ब्रह्मादिक के सुख से अधिक महासुख प्राप्त करता है । इस प्रकार महाराजने शिक्षापत्री में श्लोक ०८ में कहे है ।

सदाचार अर्थात् क्या ? अच्छे आचार जो शास्त्र एवं लोगो में प्रसंशा किये गये हो उसी का नाम सदाचार है ।

यम-नियम के पालन हेतु भागवत में कहा गया है । अहिंसा, सत्य, अस्तेय, कुसंग, लज्जा, असंयम, आस्तिकता, ब्रह्मचर्य, मौन, स्थैर्य क्षमा और अमय ये बारह यज्ञ है ।

बारह नियम शौच (आंतरिक/बाह्य) जप, तप, हवन, श्रध्धा, आधित्य, देव पूजा, तीर्थाटन, परमार्थ की ईच्छा संतोष और आचार्य सेवा यह भागवत में वर्णित है ।

इस यम-नियम की उपासना करना से ईच्छित मनोरथ पूर्ण होता है । महाराज के श्लोक नं. ९ में भी कहे है । जो मनुष्य अपने ईच्छानुसार कार्य करते है ।(कुबुद्धिवाले) वे सदाचारो का उल्लंधन करके अपनी मर्जी से जीवन जीते है । ये लोग इस लोक तथा परलोक में दुःख प्राप्त करते है ।

गीता में श्रीकृष्ण भगवानने भी कहा है कि ''जो शास्त्र के नियमो का त्याग करके अपने मन अनुसार कार्य करता है । वह सिद्धी नही प्राप्त करता है । सुख और मोक्ष नही प्राप्त करता है ।

इस प्रकार महाराज जिन्हे सुखिया-महासुखिया होना हो उसे सावधानी से आदरपूर्वक स्थायी शिक्षापत्री का अनुसरण करके व्यवहार करना चाहिए ।

महाराजने आज से दो सौ वर्ष पहले हम कैसे सुखी बने चिंता किये है । लिखित दस्तावेज दिये है । तो हमे इसका पालन करके शिक्षापत्री के दो सौ वर्ष के ''समैया'' को हर्षपूर्वक तैयार रहे ।

हमारे देश मे एक अत्यन्त दुःखद घटना हुई है । कश्मीर के पहलगाम में आतंवादियो द्वारा ३० निर्दोष लोगो की हत्या कर दी गयी है । इसको जानकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पूरे धर्मकुल और लाखो संतो-हरिभक्तो को दुःख हुआ । उनके परिवार को श्रीहरि धैर्य-बल दे । भगवान श्रीहरि से प्रार्थना है कि अब आंतकवाद का अंत हो । पूरे देश एवम् विश्व में दुष्टो को कठोर से कठोर सजा मिले ।

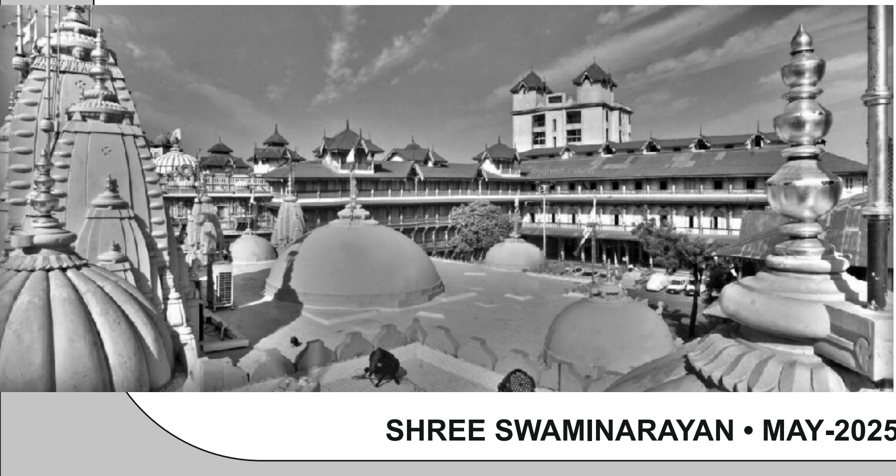

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी
का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०२५)

२-३ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजार (कच्छ) पाटोत्सव पर पधारना ।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिरकालुपुर रामनवमी श्रीहरि प्रगटोत्सव दिन पर अखंड महामंत्र धून में पधारे । दोपहर १२ बजे भगवान श्री राम जन्मोत्सव की आरती उतारे ।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपर (कच्छ) में पधारना ।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर एकादशी दर्शन हेतु पधारना ।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर खारा देवीया (मोडासा) मूर्ति प्राणप्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

१२ पूनम को श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर सत्संग सभा पर पधारना, संत महादीक्षा अपने करकमलो से पूर्ण करना । श्री हनुमानजी, श्री गणपतिजी पुनः प्राणप्रतिष्ठा अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

१३ थी १५ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) रजत जयंती महोत्सव के अवसर पर पधराना, बलदिया (कच्छ) कथा के अवसर पर पधारना ।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर बायड पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

१९ थी २३ श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (ओस्ट्रेलीया) ब्लेकटाउन २० वे पाटोत्सव के अवसर पर, पर्थ (ओस्ट्रेलीया) सत्संग सभा में पधारना ।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटण मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर खोलडीयाद (मूली प्रदेश) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना ।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०२५)

५ असारवा (श्री स्वामिनारायण बाडी गुरुकुल) वीर हनुमानजी के सांनिध्य में आयोजीत रामचरित्र मानस कथा के अवसर पर पधारे ।

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर रामनवमी के अक्षरभुवन बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक स्वयं के करकमलो से किये । रामनवमी की रात्रि में रास गरबा, लाईट शो और प्रगटोत्सव की आरती किये ।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम के सत्संग सभा में पधारे ।

१३-१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) रजत जयंती पाटोत्सव पर पधारे ।

१८ थी २२ श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (ब्लेक टाउन) का २० वाँ पाटोत्सव के अवसर पर पधारे ।

२७ रापर (कच्छ) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठाना के अवसर पर आयोजीत विजयस्तंभ स्थापना पर पधारे ।

श्री स्वामिनारायण

समैया के उपलक्ष्य में शिक्षापत्री

कस्यापि प्राणिनो हिंसा नैव कार्याऽत्र मामकैः ।
सूक्ष्मयूकामत्कुणादेरपि बुद्धया कदाचन ॥११॥

हमारे आश्रित किसी प्राणी की हिंसा इस विश्व में कभी भी नही करे, और अधिक से अधिक बुद्धिपूर्वक सूक्ष्म जीव ऐसे जु, चीटा, चीटी के प्रति भी कभी हिंसा नही करे ॥११॥

कर्मविपाक के सिद्धान्त के अनुसार करते इस विश्व में चौथे पुरुषार्थ मोक्ष के अधिकारी बने तथा निश्रेयता प्राप्त करे । इस उद्देश्य के लिये अपने आश्रितो के लिये श्रीहरि ने चारो वर्णो के लिये सामान्य नियम बताये है । ''अहिंसा परमो धर्मः'' इस सूत्र के आधार पर सर्वप्रथम जीव के हिंसा से दूर रहे। महानधर्म की स्पष्टता यहाँ पर किये है।

जिस वस्तु का निषेध किया गया हो । उसे करने पर अधिक पाप लगता है । हिंसा कार्य निषेध होने के कारण, किसी सत्संगी को हिंसा नही करना चाहिए । यह स्पष्ट आदेश है । बडे जीव की हिंसा तो करना ही नही है । ज्ञान में चीटा और मच्छर का नाश करना मना है।

श्रुति कहती है : '' न हिंस्यात सर्वभूतानि'' प्राणीओ के उपर हिंसा नही करे ।

छोटे से छोटे जन्तु को भी नही मारे । यह सत्य है कि जीवन व्यवहार में उठते बैठते छोटे जीव अज्ञानता से दब जाते है । तो यह अज्ञानता में किया गया पाप कहते है । 'अज्ञानात् हि कृतं पापम् तपसा परिहीयते' । अज्ञानता में किया गया पाप दूर किया जा सकता है । लेकिन ''बृद्धया कृतं यु यत्पापं'' इसमें कठोर नरक का विधान है ।

यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि : स्मृति में कहा गया है कि ''आत्मने उद्धदतो द्रोहो न दोषाय भवेत नृणाम'' यदि अपने पर आफत आये तो द्रोह हिंसा करने पर पाप नही होता है । तो क्या इस आधार पर हिंसा करे ? यदि कोई हमे मारने आये तो चुप रहे या उसका उत्तर दे । इसकी स्पष्टता स्मृति में देख सकते है। ''नाततायिवधे दोषः'' आततायी का वध करने में दोष नही है । जो हाथियार लेकर हमे मारने आये श्राप देने के लिये तत्पर हो, जो अपने पत्नी पर आक्रमण करने के लिये सज्ज हो, जो आप का दोष देखता हो, जो विष दे, मकान को आग लगाये ये सब आततायी है।

इन्हे मारने से कुछ भी दोष नही है। ऐसा स्मृति कहती है।

अहिंसा का सिद्धान्त अत्यन्त महान है । यह सिद्धान्त भारत में जन्मा और प्रचलित हुआ । वैदिक काल से अहिंसा, सत्य, अस्तेय इत्यादि नियमो-धर्मो का जीवन में साक्षात मिला है। जीव मात्र के सर्जक प्रभु है । जो हमे जीवन जीने का अधिकार दिये है । उसी प्रकार अन्य प्राणीयो के लिये भी यह अधिकार है। हमारी थोडी सी चोट लगने पर जो ज्ञान होता है वही सभी प्राणीयो पर लागू होता है। सभी जीवो के प्रति ममता रखना चाहिए । यह भी ध्यान देना चाहिए कि इस सिद्धान्त के पालन में बेदरकारी नही करनी चाहिए। ईसा मसीह स्वयं अहिंसा में विश्वास रखते थे । एक गाल पर कोई मारे तो उसे दूसरा गाल भी देने का कहे है । लेकिन ईसाई लोग विश्व में सबसे अधिक हिंसा किये है। क्योकि धर्म, राष्ट्र, न्याय और ज्ञान के लिये हिंसा अवश्य हो जाती है। ऐसा इतिहास बनता है । विश्व की सभी प्रजा शांतिप्रिय नही है । कुछ युद्धजीवी होते है । ये आक्रमणकारी होते है । ऐसे निर्दयी लोग के मध्य तो कडक रहना चाहिए । निर्दोष जीवो की हत्या नही करे । भगवान की सृष्टि में सबको जीने का अधिकार है । मांसाहार के लिये जीवो का वध नही करें । लेकिन देश, धर्म, न्याय, ज्ञान के लिये हिंसा का प्रदर्शन अवश्य करना चाहिए । यब बात अहिंसा के प्रचारक भी मानते है । उपरोक्त की अहिंसा, अहिंसा नही होती है। वीर ही सत्य अहिंसा का पालन करते है।

''ततसर्व वै हरेः तनुः'' सम्पूर्ण जीव जगत श्रीहरि का स्वरुप ही है। यह सोचकर हमेशा अहिंसा से दूर रहना चाहिए। भागवत में कहा गया है।

तस्मान्नकस्यचित् द्रोहमाचरेत् स तथाविधः ।
आत्मनः क्षेममन्विच्छन् द्रोग्धुर्वै परतोभयम् ॥

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो की थाल-रसोई की सूची

थाल का विवरण	थाल	रसोई
चुरमाकालड्डू	रू. २,०००/-	रू. १०,०००/-
मगशका लड्डू	रू. २,०००/-	रू. १०,०००/-
बूंदी के लड्डू	रू. २,०००/-	रू. १०,०००/-
मोतीचूर के लड्डू	रू. २,०००/-	रू. १०,०००/-
मोहनथाल	रू. २,०००/-	रू. १०,०००/-
मगशपूरी	रू. २,५००/-	रू. १५,०००/-
मालपूवा	रू. २,५००/-	रू. १५,०००/-
खीरपूरी	रू. २,५००/-	रू. १५,०००/-
अडदिया का थाल	रू. २,५००/-	रू. १५,०००/-
साटा का थाल	रू. २,५००/-	रू. १५,०००/-
शीखंड पुरी	रू. ३,५००/-	रू. २०,०००/-
ड्रायफ्रुट हलवा	रू. ३,५००/-	रू. २०,०००/-
बासुंदी पुरी	रू. ३,५००/-	रू. २०,०००/-
खीर-मालपुवा	रू. ३,५००/-	रू. २०,०००/-
गुलाब जामुन	रू. ४,०००/-	रू. २०,०००/-
जलेबी	रू. ४,०००/-	रू. २०,०००/-
मैसुब	रू. ४,०००/-	रू. २०,०००/-
काजू-बदाम मैसुब	रू. ५,०००/-	रू. २०,०००/-
सत्तरधाम का थाल	रू. ३,०००/-	
स्थायी सुरक्षित थाल		**रु. १0,000/-**
स्थायी सुरक्षित थाल (सांजमे)		**रु. ५,00१/-**

ठाकोरजी को शायं का थाल रु. ५00/-

Mo. : 8238001666

श्रीहरि के ६वे और ७वे वंशज के मुख से अमृतवचनो

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी–बापुनगर)

प.पू. महाराजश्री, जेतलपुर मंदिर के १९९ वे वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर, ता. २२-०३-२०२५ : बलदेवजी दादा के सानिध्य में अपने कितने भाग्यशाली है कि अहमदाबाद, भुज, मूली, जेतलपुर और धोलका नव में से पाँच मंदिर में महाराजने देव दिये है ।जो प्रत्यक्ष है।ये प्रत्यक्ष देव है।

महाराजने आदेश दिया है कि यह समझने वाली बात है।हम प्रतिदिन सुनते है।इस लिये प्रभाव समाप्त हो जाता है।महाराजने कहा है कि मेरे द्वारा दी गयी मूर्ति है। नरनारायणदेव, जिसकी महिमा जेतलपुर के वचनामृत में भरी पडी है।अब पढ़ना कम हो गया है।हमने स्वामी से कहा कि हमे ओडियो बुक करना चाहिए । केवल जेतलपुर के वचनामृत का, दूसरा कुछ भी नही । जो दूसरा नही हो उसे करे उसकी महिमा है।सब लोग करते है । इसमें महिमा नही है । यह ही भेड़ बकरी का कार्य है। जेतलपुर में महाराज ने देव की जितना महिमा कहे है। अब दूसरा पढ़ना बंद हो गया है।इसमें से कानभर जाये इस लिये मिलता है।

पिछ्ले २–३ दिन से मै देख रहा था । जिन हरिभक्तोने सेवा किये था । आप सभी भाग्यशाली है। ऐसा उत्सव हमेशा नही आता है।अपने उत्सव से अलग-बगल के क्षेत्र अपने श्रद्धा, अपने विश्वास का एकनिर्माण, और ताजा हो यह आवश्यक है।अभी हमने जी. के. पटेल, दशरथभाई से मैने कहा, कि उत्सव के पहले एक वर्ष बाकी रहे तो ठराव करने के लिये बाकी रखा जाता है।अब ठराव होगा ।कमेटी में मैने ट्रस्टीओ से बोला कि इस उत्सव से जो बचत होगी।उसका छपैया में उपयोग अपने दशवें मंदिर के लिये होगा।जो किसी के पास नही है।शिक्षापत्री की समैया में जो बचत होगी वह छपैया में उपयोग होगा।यह सब देव का है।हम सभी देव के प्रतिऋणी है।देव को माइनस करे दे तो कुछ पता नही चलता है।

महाराजने हम सभी के उपर इतनी कृपा और करुणा किये है । विचार करो, मै अहमदाबाद में बात किया था।इसमें कई लोग उसमें रहे होगे।१९८१ में अपने द्विशताब्दी महोत्सव मनाया गया था।बड़े लोग बैठे होगे। उस समय में छोटा था।आत्मप्रकाश स्वामी सभी युवक थे।अधिक दौडते थे।बडे-बडे दिग्गज संत थे।हम सोचे कितने वर्षो के बाद शिक्षापत्री का उत्सव आया है।८४ और २६ लगभग ४५ वर्ष हुआ ? ४५ वर्ष के बाद महाराजने शिक्षापत्री को लिखा।यह समझने वाली बात है । १९४७ के बाद **Constitution of India** (भारत का संविधान) शीध्रता से लागू हो गया । महाराजने ४५ वर्ष का निचोड करके शिक्षापत्री का संविधान दिये है।यह जलदबाजी में नही लिखा गया है। ४५ वर्ष में तिलक, चांदला, कंठी, हरिभक्त तो कोई होगा ? बात यह है कि ये देव, भगवान जैसे बलवान की दृष्टि देखकर दादा खाचर हो या ब्रह्मानंद स्वामी, महानुभावानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, गुणातितानंद स्वामी हो ये सभी संत भक्त महाराज की आँख देखकर समझ जाते थे। कि महाराज को क्या

पसंद है या नही ? शिक्षापत्री की आवश्यकता नही पडती थी । महाराज ने कहा कि मै इस मानव शरीर का त्याग करके अक्षरधाम मे जाने के पश्चात पृथ्वी पर प्रत्यक्ष मेरी वाणी ही मेरा स्वरुप होगा । यह महारजा स्वयं कहे थे । इसलिये शिक्षापत्री के रुप में महाराज आज भी प्रत्यक्ष है।

महाराज अहमदाबाद मंदिर करने के बाद ऐसा ठराव हुआ है। आज भी ठराव के कागज है। अब मंदिर नही बनाना है । अब धनवान हरिभक्तो के घर नरनारायणदेव की मूर्ति और शिक्षापत्री यह दो वस्तु रखे। सभी भक्त वहाँ जाकर पूजा करे । यह वस्तु लिखित है। सभी हरिभक्तोने कहा, महाराज ऐसा नही । हमारे नगर में भी मंदिर बनाये। इस बार अहमदाबाद का मंदिर करने मे तकलीफ आ गयी। उस समय मंदिर बनवाना कठिन था। आज अति सरल है। आज गद्दा-तकिया है। सोचे आप की तीन पीढी पहले कैसी परिस्थिति थी ? एक पीढी में ही देखे । सुखी होने वाली अपनी परम्परा है। अपना सिद्धान्त है। महाराज के आज्ञा का पालन करके लोग सुखी हुए है।

महाराजने बार-बार कहा है कि जो मैं प्रारम्भ में बोला हूँ यह धातु या पाषाण की अलंकारिक मूर्ति नही है। इसमें थोडा भी शक नही रखे। हम इसमें प्रत्यक्ष है। रेवती बलदेवजी में हम प्रत्यक्ष है। राधाकृष्मदेव में हम प्रत्यक्ष है। यह सब देव की महिमा है। हमारी नही। हम मात्र साधन है। तन, मन, धन से सेवा करते है। अपने साधन है प्रधानता देव की है। देव की कृपा से हम सभी सुखी है। ध्यान से सत्संग में बने रहे।

अभी हम लालजी महाराज के साथ बात कर रहे थे । भविष्य में चुनौतियाँ कई है ? आज २०२५ है। आगे २०५०, इसके बाद २०७५ के बाद क्या चुनौती होगी ? आज कल माता-पिता और पुत्र दूर संचार से पूछ लेते है भोजन ग्रहण किये की नही। मनुष्य के मध्य दूरी बढी है। कोविड के बाद सर्वे हुआ है कि मनुष्य-मनुष्य के बीच क्या बात करते थे भूल गये । केवल कोविड की बात चलती थी। बिना बात के लगाव कैसे होगा ? महाराज ने सत्संग में हमें सिखाये है कि आचार्य, संतो, हरिभक्तो, भाई-बहन, बच्चे-बच्चियाँ आपस में लगाव, प्रेम भाव रखे।

हम जिम में लालजी महाराजश्री से बात कर रहे थे । हमें भविष्य का एड्रेस करना है ? भूतकाल का नही, भूतकाल के जो राक्षस थे। उसे कोने मे बैठाकर कोई बात करे। इस राक्षस से उनको मारा। अब वे राक्षस अपने घर आने वाले नही है। आज राक्षस जेब में आ गये है उसे जानना है। टेक्नोलाजी खराब नही होती है। अभी आइपेड में उत्सव का लोगो को अनावरण हुआ । लेकिन इससे दुरुपयोग से खराबी भी आती है।

अभी कैनेडा से एक चौधरी हरिभक्त ने फोन किया। उसका मित्र कोई होगा। जो सत्संग में नही आता है । उसने मेरा शब्द सुनाया कि अमेरिका, कैनेडा इत्यादि देशो से भारत में पैसा मत लाये। यहाँ पर दुष्टता बढी है। यह सुनकर वह प्रभावित हुआ। इसमे हमसे प्रभावित होने का कोई कारण नही है। आवश्यकता से अधिक समय से पहले मिलने पर क्या होगा ? जमीन के उपर पैर रहेगा ? झेल नही सकते है। यह सम्प्रदाय को बैलेन्स करने की बात है। अर्न्तद्रष्टि करने की बात है। सोसायटी अर्थात् हम जहाँ रहते है वह ही नही बल्कि पूरा प्रदेश, पूरा विश्व, सोसायटी में बनाव (Issues) बनता है । त्यागी गृही, बच्चे-बच्चियाँ कोई भी हो उसे प्रतिदिन चुनौती का सामना करना पडता है। करते है न ? छाती पर हाथ रखकर कहो। यदि नही तो सीधे लिफ्ट में बैठकर अक्षरधाम चले जाओ ।

विदेश में कई लोग क्या करते है ? कचरा को हटाकर कारपेट के नीचे दबा देते है। अर्थात् दिखता नही है । यह ढका कचरा कहलाता है। हटाया नही गया है। यह पलायन वाद है । हमे प्रतिदिन चुनौती स्वीकार करके निदान करना है। उसे पूरा करना है।

दो दिन पहले दो संत बोले, सभा में चलो, विलम्ब हो रहा है । वहाँ पर एक संतने कहा पानी के परब का

उद्घाटन करना था। जाकर पानी पिया। यह परब नही है। यह सम्प्रदाय का मूल है। महाराजने परब और अन्नक्षेत्र से सम्प्रदाय बनाये है। किसी को दुःखी देखकर, देखकर न रुके, दया तो आये ही। उसे अन्न, धन, वस्त्र, इत्यादि देकर दुःख टाले । करुणा दृष्टि करके किसी को महाराजने मर्सीडीज दिया ?

कुछ समय पूर्व आत्मप्रकाश स्वामी से एक बात सुनी थी। ठंडी का समय था। ठंडी अधिक थी। शायंकाल था। कोयले की भठ्ठी लेकर संत-भक्त बैठे थे। महाराज थोडी दूरी पर बैठे थे। पतला वस्त्र पहने थे। सुरा बापू को लगा कि महाराज को ठंडक लग रही होगी। वह दूर जाकर कही से एक नई साल ले आये। और महाराज को ओढा दिये । तुरंत वहाँ पर पतला वस्त्र पहनकर एक हरिभक्त आया। महाराजने उस साल को हरिभक्त को ओढा दिया। सुनने वाली बात है। सुरा खाचर गुस्से में आ गये। हे महाराज ! मै किसी के लिये लाया था। आप किसी और को दे दिये ? आतम स्वामी आप को याद है ? आज इस प्रसंग को हमे बताये थे। यह अवसर आज तक मुझे याद है। क्योकि इसमें मानवता का संदेश है। नही तो मै याद क्यो रखता ?

किसी को दुःखी देखकर न रुके, यह महाराज की स्वाभाविक चेष्ठा के पद गाते थे। बाद में स्पीड बढ गई। १६०, १७०, १८०, १९०, २२० तक गई। फिर दुकान ही बंद हो गयी। महाराज का स्वभाव कैसा था। उन देवो का दर्शन करने पर महिमा का ज्ञान होगा। विचार करे। एक आरती पर्याप्त है। यदि उसकी एक पंक्ति शिष्य मुक्तानंद स्वामी, महाराज के बड़े भाई थे। रामानंद स्वामी महाराज को गद्दी पर बिराजे थे। उम्र छोटी थी। मुक्तानंद के मन मे हुआ। यह आज कल का आया बच्चा गद्दी ..... आज की भाषा में कहे तो. अर्थात् मुक्तानंद स्वामी महाराज के पैर छुने नही आते थे । वही मुक्तानंद स्वामीने जय सद्गुरु स्वामी.... आरती बनाये थे। जो आज तक हम लोग गाते है। नरनारायणदेव का अद्भुत कीर्तन बनाये जीत में "पर्व" में बाहर लाये थे। यह इतिहास है। इसे जानना आवश्यक है। नही जानने पर सब खराब है। पानी में डंडा पीटने वाली बात है।

अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी कहते है। आप याद अधिक रखते है। याद तो रखना ही चाहिए। इतिहास को भूलना नही, याद रखना चाहिए। नही तो हमें पता नही लगेगा किसके लिया क्या कर रहे है। हम कहाँ पर थे। क्या करने आये है ? क्या कर रहे है ? क्या करने की आवश्यकता है । जो ज्ञान रखता है । उसे महाराज बुद्धिशाली कहते है। कथा में हम लोग पोथी बंद रखते है। खोलने पर हमे और आप को वैराग्य आ जायेगा । खोलकर वक्ता के समान कहे तो श्रोता वक्ता कोई नही बैठे । कई लोग तो एक्रेलिक के बक्से में बंद करके रख देगे। उपर जो पूजा करना हो करते रहे ! यह वास्तविकता है। मै हल्के में बात कर रहा हूँ। अधिक-गहराई वाली बात है। आज अपने पास जो वस्तु है उसका मूल्य समझना है। २०० वर्ष का उत्सव होगा। २०० वर्ष तो निमित्त है। यहाँ तो प्रतिदिन उत्सव है। ब्रह्मानंद के मेरे प्यारे रोज दिवाली है। भगवान मिले उनके लिये प्रतिदिन दिवाली है। और जिसे भगवान नहि मिले उसकी प्रतिदिन होली है।

भगवान मिले है उसकी महिमा समझे । प्रयत्न करना है। पूरी महिमा समझ सके ऐसी बात नही है। हमारी स्वयं की शक्ति नही है। केनेडा में मै बैठा था। कमेटी के सदस्य भी थे। दूसरे संत-हरिभक्त ४० लोग जैसे बैठे थे। अधिक रसप्रद बात है। मैने पूछा कैसा चल रहा है ? वह आँख बंदकर सामान्य रुप में नही ऐसा सुख मिलता है। मैने कहा मुझे नही आया। तो आप को कहाँ से आया ? ऐसा है तो आप यहाँ पर बैठ जाईये। झूठ बोलना सीमा मे रखो। बात यह है कि महाराज को परखने का प्रयत्न करना है । यह लगाव कैसे आयेगा ? यह ठक्कर परिवार, ये दशरथभाई, राजूभाई सभी लोग बैठे है । मैं सबको

पहचानता हूँ । **End of the Day** पहचान होने पर लगाव होता है ? संत तो हरिभक्त हो आपस में पहचान होने पर लगाव तथा पहचान होने पर आपस में परस्पर बुद्धि रखकर रहे । सर्वगुण सम्पन्न कोई नही होता है । आपस में अच्छे गुणो को ग्रहण करना चाहिए। आप विचार करे । एक हरिभक्त की पहचान करके लगाव में वर्षो निकल जाता है । तो भगवान को पहचानने में कितना समय लगेगा ?

अपने सम्प्रदाय के पास गद्य पद्य में लिखे विशाल साहित्य है । जो दुनिया के किसी सम्प्रदाय में नही है । यह कब तक पूर्ण होगा ? जितना हो सके इतना महाराज को जान सके इसके लिये अर्न्तद्रष्टि का उत्सव है । यह पैसे का उत्सव, रुपये का उत्सव, धर्मगुरु का उत्सव का उत्सव नही बल्कि यह देव का उत्सव है । पी.पी. स्वामी जेतलपुर इन्होने धर्मकुल स्थापना की बात की है । स्थापना किये तो किये । महाराज पहला और दूसरा खतरा कर लिये । बाद में निर्णय किये कि इसमें से कोई नही चलेगा । साधु को गद्दी पर बैठाये । ब्रह्मचारी को बैठाये, गृहस्थ को बैठाये । राजनभाई यह इतिहास है । महाराज बोले ये सब परिवार में रहे तो अच्छा है । इसके बाद हमको बैठाये । इस लिये हम प्रयास कर रहे है । हम साधन है । साध्य नही । हम २१३ के सवा दोसौ श्लोक करके दिये । यह २१२ ही रहने वाला है। आज वडताल में इतने आचार्य हुए । अहमदाबाद में इतने आचार्य हुए । सब की रीत यही रही है । किसी आचार्य को खुश नही करना । किसी संत को खुश नही करना, किसी हरिभक्तो को खुश नही करना । भगवान के भक्त के प्रति लगाव रखे ।

आप भगवान को खुश रखेगे तो हम आप को खुश करेगे । आप को पहचानने वाले है । यहाँ आया हूँ । भगवान जिसे रखे है । वह सीधे आफिस में आता है । जिसे नही रखे है वह नहीं आता है । देव का बने इतनी सी बात है । जितना देव का बनेगे इतना ही आप सुखी होगे । यह हमारी अन्तर से पूर्ण मान्यता है ।

परम्परा रहे सिद्धान्त रहे इस लिये बड़े मे उत्सव मनाना है । पाँच-सात मानव के जीवनमें बलदेव दादा की महिमा बढेगी तो पूरा उत्सव सार्थक है । यह उत्सव किसी को दिखाने के लिये नही बल्कि देव का उत्सव है । अपना और भगवान का मिलाप हो । इसका यह उत्सव है । मैं कहू कि न भूतो न भविष्यति तो यह झूठी बात है । हम और नही रहेगे तो भी इससे बड़ा उत्सव मनाया जायेगा । और अधिक उत्सव होगा । मै स्टेम्प पेपर पर लिख कर दे दूँगा । स्वामिनारायण सम्प्रदाय ऐसा-वैसा सम्प्रदाय नही है ? अपने और भगवान के मध्य गहरा सम्बन्ध करे । घर परिवार में ऐसा वातावरण दे सके । इसका यह उत्सव है ।

यजमान परिवार पुराना और परिचित है । आप सभी परिचित है । अच्छा लाभ लिये । १२ बजे तक अच्छे से पूरा हो गया । अब ठाकुरजी को भोग लगाये । गर्मी है । अधिक समय बीतने पर अधिक खा लेते है । अभी मापसर भोजन करले । भगवान हम सभी के लिये मध्यम मार्ग बताये है । अतिशय के लिये मना किये है । कुछ लोग भूखे मरते है तो चार्बाक वाले खा-खाकर मरते है । भगवान की महिमा बच्चे-बच्चियो में बढे ऐसा घर का वातावरण बना रहे । यह जिम्मेदारी अपनी है ।

दशकोशी के गाँव देव के प्रति निष्ठावान है । जेतलपुर के आस-पास गाँवो में अधिकतर मंदिर महानुभावानंद स्वामीने बनवाया जो अच्छे मंदिर है । आस-पास के गाँवो में जागृति आयी । गर्व से कर सके ये हमारे भगवान है । भगवान आप सभी का भला करे । मंगल करे ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है ।

प.पू. बड़े महाराजश्री, श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के १४ वे स्थापना दिवस पर, ता. २९-०३-२०२५ : को आदरणीय संतो तथा प्रिय सत्संगियो, आज यदि सबसे अधिक आनंद है तो वह मुझे है । महाराजने ऐसा विचार दिये यह बड़ी बात है । जब भगवान खुश होते है तो धन, लक्ष्मी यश नही देते, अच्छे विचार देते है । शेष स्वतः मिल जाता है । भगवान नारायण होने पर लकडी

लेकर मारते है। ऐसे विचार देते है कि डंडा खाना पडता है। मार खाना पडता है।

ऐसा विचार आया, महाराजने एक प्रेरणा दिये। इसमे आचार्य महाराजने अधिक सपोर्ट किया। इस लिये यह अच्छा कार्य हुआ। इस लिये अच्छा कार्य है कि आजतक अपने पास प्रसादी की वस्तुए वास्तव में थी। उनका मूल्य जितना था। वह समझ में नही आता था। हमने ऐसे उदाहरण देखे है दोनो देश के मंदिरो में एन्टिक डीलर धुमते थे। वे संतो के पास से वस्तु तथा पुस्तके खरीद लेते थे। तथा उसे बाहर बेचते थे। हमारे पास एक महाराज की भोजन करती मूर्ति आयी। मेरा सहपाठी मित्र था। उसने मुझे यह दिया था। मैने पूछा 'आप कहाँ से लाये'। हम एन्टिक डीलर (व्यापारी) के पास से रु. ३००० में खरीदी है। मूर्ति के पीछे गुणातीतानंद स्वामी के शिष्य जो बालमुकुंद स्वामी थे। उनके पूजा की यह मूर्ति थी। घुम-घुम कर हमारे पास ही आ गयी। यह अवस्था थी। अभी आप को यमदंड देखना हो तो शायद ही मिले। सभी दंड एन्टिक रोड में बिक गये है। इस अवस्था से बचने के लिये एक सुंदर विचार आया। आज इस बात का आनंद है कि दूसरे मंदिरो में जागरुकता आयी है कि प्रसादी वस्तुए सावधानी से रखने का प्रयास कर रहे है। इससे हमें अधिक खुशी है।

ये सभी अद्भूत वस्तुए है। पूरी कथा तीन दिन तक सुने। अत्याधिक आनंद आया। कथा के लिये तीन दिन कम पडा। यह कथा दस दिन तक चला वही भी कम पडा है। जिस प्रकार रामकृष्णदासजी स्वामीने विशेष कथा कही आनंद आया। स्वामी को धन्यवाद देता हूँ। साथ में यह कह रहा हूँ कि हम जनमंगल की कथा करते है। स्वाभाविक चेष्ठा की कथा करते है। उसी प्रकार भविष्य में गाँवो में संत प्रसादी की वस्तुओ की महिमा की कथा करे यह इच्छनीय है। इससे वस्तु के महत्व के विषय में ख्याल आता है।

जिन हरिभक्तोने सेवा दिया है। स्वयंका योगदान दिये है। ये सभी धन्यवाद के पात्र है। महाराज से प्रार्थना करते है कि उत्तरोत्तर प्रसादी की वस्तुओ में अनेक दिव्यता रही है। उसका स्मरण करे। विचार करके प्रशंसा करे।

हम सब नवधाम कहते है। यह स्वामिनारायण म्यूजियम दसवाँ धाम है। प्रसादी की वस्तुओ का जो एकबार दर्शन कर लेता है। उसे दूसरी बार दर्शन का मन करता है। संसार में राजा-महाराज का म्यूजियम कोई एकबार देखे फिर देखने का मन नहीं करता है। निर्जीव वस्तुए होती है। मुझसे कोई व्यक्तिगत रुप में पूछे तो मुझे स्वयं म्यूजियम अच्छा नही लगता है। देश-विदेश में भी हम घुमते है। साथ वालो से कह देते है। इसमें क्या देखना? आप जाओ, हम बाहर बैठे है। अपना म्यूजियम, म्यूजियम नही है मंदिर है। यहाँ पर एक एक वस्तु बोलती है। एक-एक वस्तु अपने साथ बात करती है। दिव्य अनुभूति मिलती है। जब कि संसार के म्यूजियम में २००० वर्ष प्राचीन वस्तुए होने के बाद उसमें आनंद नही आता है।

कभी-कभार हरिभक्त चलकर म्यूजियम के दर्शन हेतु आते है। संकल्प भी रखते है। अभिषेक भी रखते है। पूजा रखते है। यज्ञ रखते है। यह अलौककि १० वाँ धाम है। इन उत्सवो द्वारा, कथा द्वारा, सत्संगियो के अंतर में विशेष महिमा आये। अनंत जीवो का कल्याण हो। ऐसी महाराज से प्रार्थना है।

दूसरी एक बात, छपैया की बात हुई। इस लिये यह याद अपना छपैया की प्रशंसा नही कर रहे है। लेकिन सत्य कहता हूँ। अभी दो-तीन टूर-ट्रावेल्स वाले एजेन्ट उत्तर भारत की यात्रा के लिये बस ले गये थे। उन्होने शिकायत किया कि हमे टूर में अन्त में छपैयाधाम रखना पडता है। सोचने लगा। इसका क्या कारण है? मुझे ज्ञात नही हुआ। तो वह स्वयं समझाया कि छपैया में इतनी सुविधा है कि दूसरी जगह अच्छा नही लगता है। छपैया में रुकने के बाद और कही अच्छा नही लगात है। इस लिये छपैया को बाद में रखते है।

गोरसिया सेवा फाउन्डेशन

मार्गदर्शक : गिरधरभाई मेघजी पिंडोरिया - गाँव माधापर वर्त. तंजानिया, तेजबाई विश्राम गोरसिया - गाँव - बलदिया (कच्छ)

गोरसिया सेवा फाउन्डेशन द्वारा नंदीशाला - बलदिया, गजोड तथा लेर में कार्यरत है । जिस में गोरसिया सेवा फाउन्डेशन के द्वारा विशेष करके गाम प्रकृति और पर्यावरण के लिये कार्य किया जाता है । जिस में गौ-माता प्रकृति और पर्यावरण का पूरे पृथ्वी का इको सिस्टम एक मूल रुप में है । इस संदर्भ में गौमाताओ की संख्या बढे, तथा भूमि पर उनका परिभ्रमण तथा चरणरज, गोबर, गौमूत्र जिस जगह को पवित्र करेगा । उस जमीन का स्वास्थ्य अधिक अच्छा और सुधरा होगा । इसके लिये हमने ये नंदीशालाये बनाये है । और इसका पुनरावर्तन अलग-अलग जगह पर अलग अगल गाँवो में किया जा सकता है । इसी प्रकार लगभग १५०० की संख्या में माधापर गाँव से १५ कि.मी. दूर आये गाँव लेर-कच्छ मे नंदीशाला बनाने जा रहे है । जिस में अभी गजोड में ३५० तथा लेर में ६०० नंदियो की व्यवस्था की गयी है । इस जगह पर एकदम स्वस्थ और सम्मानपूर्वक नंदी यहाँ पर रहे इसके लिये प्रबन्ध किया गया है । इसमें धूप, छाया, ठंडी और वर्षा से रक्षण हेतु व्यवस्था की गयी है । जो नंदी धुमते हो उसे सम्मानपूर्वक रखते है । धुमने वाले नंदी का गोबर यहाँ पर सुगंधीत हो जाता है । इसका अर्थ यह हुआ । कि नंदी का स्वास्थ्य अच्छा है।

अपने वैदिक शास्त्रो में जो गायो कि महिमा की गयी है । उसी अनुसार गौवंश, गोपालक की रक्षा करना अपनी भूमि पर आवश्यक हो गया है । खराब दिनो में हम चारा के लिये कैम्प करते है । ५००० मालधारियो की गाये यहाँ पर लाभ ले रही है । गौवंश तथा गोपालको की इस विकट अवस्था में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री गोपालको का समाचार लेने गये थे । गोपालक लोग कृतज्ञता आदि किये । अन्तकरण से आनंद व्यक्त करते है । गौपालक गाय के लिये सम्पूर्ण जीवन परिवार के समर्पित कर दिये है । जिस प्रकार कृष्ण अपने बालपन के ११ वर्ष तक अपना बालपन का जीवन कार्य गोकुल में बिताये । प्रकृति और पर्यावरण के लिये दे दिये । और ये गोपालक भी अपना पूरा जीवन गाय के लिये दे दिये है । ये सभी धन्यवाद के पात्र है । इस वेद लक्षण वाली गायो को पूरे भारत में यदि बचाना है । तो इन गोपाल को को धन्यवाद का पात्र समझे ।

आज गौपालक तथा मालाधारी गौचर भूमि के जो प्रश्न है । जिस में विदेशी बबूल उग गये है । इसके लिये भी हम लोग एक प्रकल्प चला रहे है । इस गौचर भूमि को पुन: रिडेवपमेन्ट करना । बबूल को निकालना तथा उसमें अच्छी घास उगाना है । इसके लिये हम लोग दो मशीने रखे है । ये मशीने तीन-चार वर्ष से गौचर जमीन मे से विदेशी बबूल निकाल रहे है । नये घास के बीज रोप तथा गौचर भूमि के तालाब से

बबूल निकालकर इसमें जो पशु निवास करते है। उसके लाभ लेने का प्रकल्प चल रहा है।

यहाँ के गजोड रण केन्द्र में अपनी गायो और मालधारियो के लिये पानी, घासचारा और गायो की छाया के लिये सेक्टर स्थापित है। जहाँ पर तीन चार महीने रहती है। अच्छी वर्षा होने पर गौचर भूमि में गाय और मालधारी चले जाते है। जब तक लोग यहाँ पर रहते है। उनके बच्चो की शिक्षा व्यवस्था करते है। जब ये मूल गौचर जमीन में गायो को ले जाते है। यहाँ पर उनकी औरते, बालक के शिक्षण स्वास्थ्य जितना बन सकता है। उतना ठाकुरजी को साथ में रखकर उनकी चिंता करते है।

ये गोपालक वास्तव में गाय नाम का धन और इस में से विशेषकरके गाय का गोबर यह समृद्धि के साथ लेकर धुमती है। इस लिये ये धनवान है। यह मालधारी समुदाय गाय से इतना प्रेम करते है कि स्वयं भूखे रहे कष्ट सहे। गाय किसी के अन्य खेत में जाये ये स्वयं मार सह लेते है। लेकिन गाय को दुःखी नही होने देते है। यह इसकी विशेषता है। वास्तविक रुप में समाज मे बने रहना इन्हे तकलीफ होती है। वर्तमान समय में ये सामाजिक जीवन सम्मान पूर्वक व्यतीत करे इसके लिये प्रयास किया जा रहा है। इनका सामाजिक आर्थिक विकास हो। इसके लिये अपनी संस्था हमेशा कटिबद्ध है। और प.पू. आचार्य महाराजश्री इनका समाचार पूछने तथा प्रेम से आये है। तथा आपश्री के विषय में जान सके। इसके लिये खूब आनंद आया। काकरेज ब्रीड की अर्थात् हडप्पीय संस्कृति के समय से ६ से ७ हजार वर्ष तक बनाये रखे है। यह वेद लक्षणा कांकरेज गाय यह कच्छ बनासकांठा, उत्तर गुजरात, राजस्थान के कुछ भाग और पाकिस्तान का सिंध प्राप्त इस गाय का वंश सुरक्षित है। इस वंश की विशेषता चतुर बुद्धि वाली होती है। शायद भारत में इतनी बुद्धिचातुर्य वाली गाये कम हो सकती है।

दूसरा काम हम लोग संवर्धन का भी करते है। संवर्धन का अर्थ गाय के नस्ल का वंश आगे बढे। शास्त्र में गाय की पूजा का वर्णन भी आता है। यह संवर्धन गाय के लिये पूजा है। इस कार्य के लिये हमारे द्वारा गोधन तथा नंदी की उत्तम जाति की क्वालिटी भी सुरक्षित रहे। इसके लिये पाँच पीढ़ी तक उसकी माँ-पिता का हिसाब रखा गया है। अपने पास उत्तम ब्रीड रुप, दूध, और चतुरता के लक्षण के साथ गोधन बना रहे। हम जिस बछडे को नंदी के रुप में लेना चाहती है। उसका चयन कर लेते है। वह अपने माँ का पूरा दूध पीता है। नंदी तैयार करके गाँव-गाँव में भेजते है। ताकि उनका वंश आगे को बढे। इसका पूरा रजिस्टर बना कर रखते है।

ठाकुरजी के काम मे अर्थात् गाय माता की सेवा करने के लिये माता ये जो अवसर दी है। इसके लिये हम ऋणी है। इसके लिये विशेष कर के जो प्रकृति, पर्यावरण के लिये गाय के लिये जो कार्य होगा। इस में माधापर के वर्तमान तंजानिया में रहने

માંડવી (કચ્છ)મંદિરનો રજત જયંતી મહોત્સવ સમગ્ર ધર્મકુળનાં સાંનિધ્યમાં ઉજવાયો

નારણપર (કચ્છ) મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા તથા વૃક્ષારોપણ કરતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી સાથે ભુજ તથા અમદાવાદ મંદિરના મહંત સ્વામી

કોડકી(કચ્છ) મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી સાથે ભુજના સંતો અને પાર્ષદ જાદવજી ભગત

રાપર (કચ્છ) મંદિર મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં વિજય સ્તંભ આરોહણ વિધિ કરતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી સાથે ભુજના સંતો

બળદિયા (કચ્છ) મંદિરના ૫૦ મા પાટોત્સવ પ્રસંગે સભામાં દર્શન આપતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી

બાયડ મંદિરમાં મૂર્તિ પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા વિધિ કરતા તથા મંદિરનું ઉદ્‌ઘાટન કરતા પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

ખારા દેવીયા (મોડાસા) મંદિરમાં મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા કરતા તથા સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી

આપણા કાલુપુર મંદિરમાં અગિયારસના દિવસે મુમુક્ષુઓ ને સંત મહાદીક્ષા આપતા શ્રી નરનારાયણદેવ દેશ પીઠાધિપતિ પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

પાટણ મંદિરમાં મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા વિધિ કરતા અને સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રી

ભુજ મંદિર દ્વારા સમૂહ શ્રીમદ્ ભાગવત કથા પ્રસંગે સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.મહારાજશ્રી

ઉનાવા મંદિરના પાટોત્સવ પ્રસંગે ઠાકોરજીનો અભિષેક કરતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી તથા રામજી મંદિરમાં અભિષેક કરતા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી તથા સભામાં આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ. મહારાજશ્રી અને પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

અસારવા ગુરૂકુળમાં શ્રી હનુમાન જયંતી ના ઉપલક્ષમાં રામચરિત્ર માનસ કથા પ્રસંગે આશીર્વાદ આપતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી તથા બહેનોની સભામાં કથા શ્રવણ કરતા પ.પૂ.શ્રીરાજા

જમીયતપુરા (પ્રભા હનુમાનજી)શ્રી હનુમાન જયંતી પ્રસંગે અન્નકૂટ આરતી ઉતારતા પ.પૂ.લાલજી મહારાજશ્રી

જેતલપુર મંદિર દ્વિશતાબ્દી મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ટોરડા મંદિરમાં અખંડ ધૂનનું આયોજન કરાયું હતું

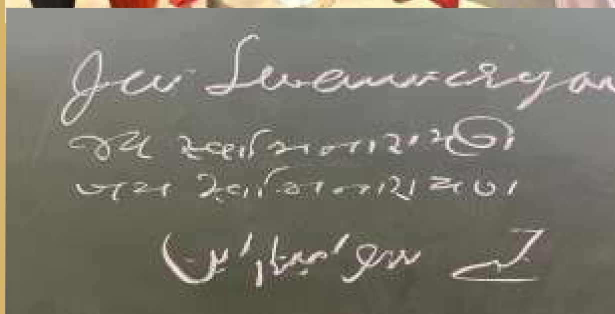

પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી આપણા છપિયા મંદિર દ્વારા નૂતન શાળાનું નિર્માણ કરી સરકારને અર્પણ કરાઈ ત્યારે પૂ.મોટા મહારાજશ્રીએ શાળાના બોર્ડ પર ઉર્દૂ સહિત ભાષામાં જય સ્વામિનારાયણ લખ્યુ હતું

સમૈયાના ઉપલક્ષમાં ગોતા (વંદેમાતરમ્) માં શિક્ષાપત્રી સત્સંગ સભામાં કથા વાર્તાનો લાભ આપતા અમદાવાદ મંદિરના મહંત સ્વામી તથા સંતો .

वाले हमारे मित्र गिरधरभाई पिंडोरिया का मार्गदर्शन हमें मिलता रहता है । विशेषकर आर्थिक सहयोग और पूरे भारत के मार्गदर्शन गिरधरभाई से मिलता रहे । सभी गौप्रेमी भक्त पूरे मन, तन, धन से सहयोग देते रहे और ठाकुरजी का कार्य चलता रहे । यहाँ पर लगभग ४५०० से ५००० जितनी गाये है । मालिक जिसको नाम से बुलाता है वे दौडकर आ जाती है । ये मालधारी १०० से ५०० तक की गाये रखते है । एक सीटी मारने पर कुछ ग्रुप की गाय बाहर आती है । यह कल्चर मालधारी कल्चर गायो मे है।

छ हजार वर्ष पहले श्रीकृष्ण भगवान के समय भारत की अर्थव्यवस्था गायो के उपर थी । इस समय यह कम होता चला जा रहा है । आज मालधारी कल्चर रीसर्च का विषय बनता जा रहा है । अब देखो तो गुजरात-राजस्थान तथा कुछ मध्यप्रदेश जैसे क्षेत्र में मालधारी है । शेष भाग में समाप्त होता जा रहा है । गुजरात में कच्छ में मालधारी दिखाई देते है । गायो का ग्रुप विखंडित होता जा रहा है । इस से मालधारी सभ्यता समाप्त होती जा रही है । इस कल्चर को बचाना आवश्यक है।

अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री को समय नही होता है । अन्तराष्ट्रीय स्तर पर यहाँ भी सत्संग सभा करनी हो तो ताप में लगभग ४५ डिग्री टेपरेचर अधिक धूल, मक्खियो का झूंड के बीच आप जो गाय प्रकृति और पर्यावरण को मालधारियो की सहायता हेतु सपोर्ट के लिये पधारे है । ये सभी गाये । ये मालधारी समाज से हम ऋणी है । आभार बापजी पधारियेगा । यह बात सभी लोगो तक जाये । तथा सभी लोग समझ सके । ऐसी अपेक्षा है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर चैत्र सुद-१५ सत्संग सभा ठाकुरजी के लिये थाल संत-हरिभक्तो की रसोई के यजमानश्री

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के खुशी के लिये तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा से पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर में पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से चैत्र सुद-१५ पूनम ता. १२-०४-२०२५ शनिवार सत्संग सभा, ठाकुरजी की थाल, संत-हरिभक्तो के रसोई के यजमान : भक्तराज श्री रामदासबापा परिवार - उनावा, अ.नि. भुलाभाई लालभाई छलाभाई पटेल के हाथो से संजयभाई रमणभाई शंकरभाई पटेल, मीनाबेन संजयभाई रमणभाई पटेल - समस्त उनावा सत्संग समाज. श्री हनुमान जयंती के यजमान : अ.नि. रमणभाई शंकरभाई भुलाभाई पटेल, अ.नि. कान्ताबेन रमणभाई शंकरभाई पटेल - हस्ते संजयभाई रमणभाई पटेल, केतनभाई रमणभाई पटेल, मयुरभाई रमणभाई पटेल (रामदासबापा परिवार - उनावा). ध्वजा के यजमान : संजयभाई रमणभाई शंकरभाई पटेल, मीनाबेन संजयभाई पटेल (रामदासबापा परिवार - उनावा). शास्त्री स्वामी सुव्रतस्वरूपदासजी (कालुपुर) के वक्तापद से कथा की सुंदर व्यवस्था की गयी थी ।

जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्सव
તા. ૫-૩-૨૦૨૬ થી
તા. ૧૧-૩-૨૦૨૬

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव
(ता. ५-३-२०२६ से ११-३-२०२६)

आयोजनपत्रम्

सभी सत्संगियो को बताते हुए आनंद होता है कि,

भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभुने अपने हाथो से नव मंदिरो का निर्माण किये । उस में पाँचवे स्थान पर जेतलपुरधाम में अपने हाथो से निजमंदिर में रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की प्राणप्रतिष्ठा किये । वह आगामी वि.स. २०८२ फाल्गुन वद अष्टमी ता. ११-३-२०२६ के शुभ मंगल दिन पर २०० वर्ष पूर्ण हो रहा है।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा बड़े महाराजश्री प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष पद से द्विशताब्दी महोत्सव भव्यरुप में मनाया जायेगा।

द्विशताब्दी महोत्सव के आयोजन

महोत्सव के मुख्य यजमान : श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा, २०० कुंडी महाविष्णु यज्ञ, ५१ कुंडी समूह महापूजा, अखंड धून, सांस्कृतिक प्रदर्शन, प्राकृतिक फूलो का मेला, मंत्र मंदिर, मेडिकल फ्री सेवा, नवदाम दर्शन, समूह यज्ञोपवीत, धर्मकुल और जेतलपुरधाम डाक्युमेन्टरी, महापूजा और वचनामृत का डिजीटल लाइव, चार वेद, पाठ-हवन, धर्मकुल स्थापना २०० वर्ष को महत्ता, पर्यावरण जागृति अनेक प्रकार के कार्यक्रम २०० जितने अनेक कार्यक्रमो को मनाना।

महोत्सव के पूर्व आयोजन : २०० घंटे की गांवो में अखंड धून - घर घर मंत्र लेखन, सत्संग सभा, महापूजा, प्रभातफेरी, पदयात्रा, जरुरतमंद लोगो की सहायता, रथयात्रा, वृक्षारोपण, मेडिकल कैम्प, रक्तदान, छात्रो को बैग वितरण, वनवासी क्षेत्र में कम्बल वितरण, जेतलपुर मंदिर तथा महामंदिरो में धुन का कार्यक्रम २०० दिन का अखंड वैदिक विष्णु यज्ञ।

अपने गाँवो में महोत्सव के उपलक्ष्य में जो जो आयोजन हो उसकी जेतलपुर मंदिर को ज्ञात कराये।

महोत्सव की सेवा की सूचना

महाविष्णुयज्ञ का पाटला : प्रथम आवरण रु. १,००,०००, द्वितीय आवरण रु. ५०,०००

होमात्क समूह महापूजा का पाटला : रु. २५,००० और रु. १०,०००

महोत्सव में धन्य, धान्य, वस्तु के रुप में यथा शक्ति सेवा दे सकते है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम, ता. दशक्रोई, जि. अहमदाबाद-३८०२४२७

फोन : ९०९९९३९९७६, ९५५८७६६८७२

E-Mail : jetalpur200@gmail.com

लाईव प्रसारण : **www.swaminarayan.in**

और कालुपुर मंदिर की **youtube & facebook** चेनल

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये

प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-अप्रैल-२०२५

ता. १३-०४-२०२५	प.भ. विनोदभाई वालजीभाई सोनी - प्रहलादनगर - अहमदाबाद.
ता. १५-०४-२०२५	अ.सौ. राधिका विशालभाई पटेल तथा अ.सौ. उषाबेन अरविंदभाई पटेल डुंगराणी - ह. रीटाबेन आर. शाह - टोरडा.
ता. २७-०४-२०२५	अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल - ओला (कलोल) - ह. बिन्देश जगदीशभाई पटेल - ह. गांधीनगर.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची-अप्रैल-२०२५

रू।. १,००,०००/-	एक हरिभक्त - करजीसण ।
रू।. ५१,०००/-	प.भ. जय गणपतभाई गंगारामभाई पटेल - पंढरपुरा-अहमदाबाद जर्मनी में प्रथम वेतन के अवसर - ह. रक्षाबेन गणपतभाई पटेल ।
रू।. ५०,०००/-	प.भ. भारतीबेन अशोककुमार एल. दवे - अहमदाबाद ।
रू।. ५०,०००/-	प.भ. डॉ. वसंतभाई एम. वालु - नारणपुरा ।
रू।. ५०,०००/-	प.भ. हर्षाबेन नरेन्द्रकुमार भावसार - महेसाणा ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલ:- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "सम्पूर्णश्रध्धा रखे और आगे बढे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जब हम आध्यात्मिक जगत में आगे बढने का प्रयास करते है तो 'श्रद्धा' एक महत्वपूर्ण विषय है । 'श्रद्धा' हमें अंदर से आनी चाहिए । तभी आगे बढ सकते है । श्रद्धा अर्थात क्या ? मन में बिना विकार लाये । एक-एक शब्द को प्रत्यक्ष मानकर सत्शास्त्रो की बातो को मानना उसे ''श्रद्धा'' कहते है । दूसरे शब्दो में कहे तो ''भगवान के वचन में विश्वास रखना'' और श्रद्धा क्यो आवश्यक है ? श्रद्धा के पीछे ज्ञान स्थायी रहता है । श्रद्धा होने पर ज्ञान मिलता है । समझ में आता है । जीवन में बना रहे । 'ज्ञान' अर्थात् क्या ? सत्य-असत्य का भेद करनेवाला 'विवेक' हो तो उसे ज्ञान कहते है । हमें व्यवहारिक संसार में जो पुत्र आज्ञाकारी होता है । माता-पिता की बात का अनुसरण करता है । उसे माता-पिता अपनी सम्पत्ति दे देते है । इसी प्रकार अधिक ''श्रद्धा'' होने पर भगवान ज्ञान रुपी सम्पत्ति दे देते है । भगवान के वचन में पूर्ण विश्वास एवम् पूर्ण शरणागति हो तो 'ज्ञान' मिलता है । श्रीकृष्ण भगवानने अर्जुन को कब ज्ञान दिये थे ? जब अर्जुनने पूर्ण शरमागति स्वीकारी तथा भगवानके वचन में विश्वास रखा । ज्ञानी-अज्ञानी किसे कहते है ? ज्ञानी को जड़ और चेतन के अन्तर का पता चलता है । अज्ञानी के पास यह गुण नही होता है । दूध और पानी को अलग नही कर सकता है । यह कार्य मात्र हँस ही कर सकता है । ज्ञानी ही जड-चेतन को जान सकता है । सत्य को समझता है । जड-चेतन के मध्य बारीक रेखा है । जिस ज्ञानी के पास अन्तर का विवेक होता है । वही समझ सकता है । अज्ञानी को समझने का भाव एवम् अधिकार भी नही है । ज्ञानी आत्मा पर ध्यान देता है । प्रथम स्थान आत्मा को देता है । और अज्ञानी मात्र शरीर पर ध्यान देता है । इस शरीर को अधिक महत्व देना अच्छी बात नही है । कुछ तो ध्यान देना ही चाहिए क्योकि यह मानव शरीर भवसागर को पार करने वाला माध्यम है । सब कुछ प्रमाण मे रखना चाहिए । अधिक खाये भी नही । अधिक शयन भी नही करे । सब माप में रखे । यदि सुखी जीवन रखना है तो अन्तकरण शुद्ध रखना चाहिए । हम अपने साथ विश्वासघात नही करे अच्छी बात है । अच्छा है कि हम दूसरे के मन की बात नही जान पाते है । मान ले यह स्थिति हमे मिल जाय तो दूसरे के मन की बात समझ ले तो क्या होगा ? कितना झगडा हो जायेगा । हमे अपना पूर्व जन्म याद नही है यह भी अच्छा है । वही जीवन व्यतीत करना कठिन हो जाता । स्वयं के लिये कुछ कडक बनना चाहिए । ''शरीर के सभी माँग को पूरा नही कर देना चाहिए । सत्संग में आने के बाद अपने मन में कुछ परिवर्तन नही आ रहा है तो अच्छी बात नही है । आप सभी हमेशा सत्संग में आते है । यदि बदलाव नही तो स्वयं से प्रश्न करना चाहिए । यदि हमे बुखार आता है तो भोजन अच्छा नही लगता है । कडवा लगता है तो क्या खाये ? कमजोरी आ जाने पर रोग बढ सकता है । दवा के साथ कुछ खाते रहने पर कमजोरी नही आती है । और बुखार समाप्त हो जाता है । इसी प्रकार सत्संग में आये और बदलाव नही आये तो सत्संग को नही छोडना चाहिए । तो स्वयं विचार करना चाहिए । हमारे अंदर कुछ तो असामान्य है । इस लिये नियम का पालन करे । सत्संग में जो नियम बताये जाये । उसका पूरा लाभ ले ।

यदि आप बिमार है तो कितना पौष्टिक आहार ले स्वस्थ नही होगे । इसी प्रकार अपने अंदर अवगुण रुपी रोग हमारे स्वभाव में रहेगा । कितना भी सत्संग करे । हमें उसका लाभ नही मिलेगा । तो हमे अपने अन्तरमन को शुद्ध रखने का प्रयास करना चाहिए । और सत्संग में आना जारी रखे । तो धीरे-धीरे लाभ मिलेगा । जिस में किसी बिन्दु पर आशक्ति नही रखना चाहिए । भगवान से अपेक्षा भी नही रखना चाहिए । केवल सद्‌बुद्धि की माँग करना चाहिए । सद्‌बुद्धि आये तो समझे की प्रभु की कृपा मिल रही है । हम लोगो के उपर हो गयी है । इस लिये हम लोग यहाँ एकत्र हुए है । और आगे बैठने की इच्छा होती है । यह प्रगाण है कि भगवानने सद्‌बुद्धि दी है । तो सत्संग में बैठकर अन्तरमन में खोज करे अभी क्या कमी रह गयी है । कौन सा अवगुण अभी हमारे भीतर पडा है । माया के जगत में क्या गलत है ? क्या हमारे अंदर कमी है । हम सभी माया के संसार में रहते है । तो हमारे अंदर अवगुण तो होगा ही । इसी दूर करने का प्रयास करना चाहिए ।

'संत' और सत्संग हमें जगाते है । और 'माया' लोरी सुनाकर नींद लाती है ।

नीद सबको अच्छी लगती है । यदि हमें अधिक नीद आये । तो कोई जगाये तो क्रोध आता है । यहि सोने देता है तो अच्छी लगता है । माया का काम अन्तरआत्मा को सुलाने वाला है । लेकिन हमे जागना है । यह जीव एक पींजरे में बंद पंखी की तरह है । पींजरे में बंद पंछी की अवस्था कैसे होती होगी । बाहर निकलने के लिये पंख फडफडाता है । हमें दया आती है । उसे उडाने का मन करता है । पींजरा खोल कर पंछी को बाहर निकालने पर क्या होता है ? यह अपने चोच से अपने उपर चोट करता है । और उड जाता है । कुछ देर में वापस आ जाता है । क्योकि उसे पींजरे मे रहने की आदत हो जाती है । इसी प्रकार मंदिर, सत्संग, भगवानने यह माया से मुक्त कराने के लिये दिये है । हम क्या करते है ? चोच मारते है । अर्थात् अवगुण रुपी कमी निकालते है । क्योकि हमें लाख चौरासी में भ्रमण करने की आदत हो गयी है । तो कमी किसकी है ? अपनी ही है । इस लिये हमे जागृत रहना है । ऐसे नरनारायणदेव मिले है । तो १००% झुक जाओ । भगवान के प्रति पूर्ण शरणागति स्वीकार कर ले । भगवान आप का सिर संसार में ऊचे रखेगे । अपने सामने तो ऐसे आठ-आठ 'आयुध' धारण करके भरतखंड के राजाधिराज ''नरनारायणदेव'' खडे है । किसी की ताकत नही है जो आप का काम बिगाड सके । हमें तो यह ध्यान देना है कि हमारे पैर कहाँ पर रहे है । 'मन' बुद्धि के आधार पर कार्य करती है । हमें बुद्धि से निश्चय करना है कि पैर कहाँ रखना है । और कहाँ नही रखना चाहिए । इस प्रकार सावधान रहे । यह सत्संग सोने वाले को जगाने वाला है । जागने वाले को सक्रिय करना है । जीवन में सभी कार्य अपने इच्छानुसार नही होता है । कुछ-कुछ ईच्छा के विपरीत भी होता है । तो यह विचार करे की इसमें भी भलाई है । भगवान के उपर पूर्ण श्रद्धा रखे और आगे बढने का प्रयास करे ।

कश्मीर में आंतकवादी हमला में मृत्यु प्राप्त देशवासियो हेतु धर्मकुल के तरफ से श्रध्धांजलि

कश्मीर के पहलगाम में आंतकवादी हमला से ३० जितने निर्दोष लोगो की हत्या का दुःखद समाचार जानकर प.पू. आचार्य महारजाश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और पूरे धर्मकुल अधिक दुःख अनुभव करता है । शहीदो के परिवार के उपर आयी आपत्ति में परमकृपालु परमात्मा उन्हे बल दे । घायल जो अस्पताल में शीघ्रता से स्वस्थ बने । तथा अपना पूर्ववत जीवन जीये । और मृतआत्मा को भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु अपने चरणो में सुख दे । यही पूरे धर्मकुल की प्रभु से प्रार्थना है ।

समैयो

के उपलक्ष्य में

"समैयो" के उफलक्ष्य में संतो द्वारा गाँव-गाँव में सत्संग-समाज लक्षीव क्रिया कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के अच्छी प्रेरणा से अपने आगामी महामहोत्सव ''समैया'' के उपलक्ष्य में अपने निम्न लिखित मंदिरो के पू. महंत स्वामीश्री तथा उत्साही हरिभक्तो द्वारा होने वाली वाली प्रवृत्तियो की झलक

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया रामबाग "समैया" के उपलक्ष्य में प्रवृत्तियाँ

प.पू. आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा प्रस्थापित श्री बालहनुमानजी महाराज के शुभ सानिध्यमें यहाँ मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसादजी गुरु स.गु. शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी के मार्गदर्शन प्रेरणा से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, महिला मंडल, और समस्त कांकरिया सत्संग समाज के सहयोग से आगामी शिक्षापत्री ''समैया'' के उपलक्ष्य में कई प्रकार प्रवृत्ति की गयी। इस में अमराईवाडी मंदिर में सभा, घोडासर, वटवा, खोखरा विस्तार में गृह सभा तथा कांकरिया मंदिर में वसंतोत्सव, समूह महापूजा, ठाकुरजी को २०० किलो ग्राम फूलो की पुष्पांजलि, श्री हनुमान जन्म जयंती पर आयोजित मारुती यज्ञ के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । वह ठाकुरजी की आरती उतारकर मारुती यज्ञ के यजमानश्री को आशीर्वाद दिये । कांकरिया मंदिर से कालुपुर मंदिर तक पदयात्रा का प्रबन्ध किया गया था। प्रत्येक दिन कथा वार्ता, प्रत्येक शनिवार को श्री हनुमान चरित्र कथा यहाँ के उत्साही महंत स्वामी शा. अभिषेकप्रसादजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी ने सुंदर से किया गया आने वाले दिनो में ''समैया'' के उपलक्ष्य में कई प्रवृत्ति होने वाली है। स.गु. शास्त्री स्वामी आनंदजीवनदासजी भी प्रवृत्ति में जुडे थे।

ईडर देश द्वारा "समैया" के उपलक्ष्य में क्रिया कलाप

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर (टोरडा) के स.गु. महंत शास्त्री स्वामी सिध्धेशवरदासजी की प्रेरणा से स.गु. ब्र. स्वा. अविनाशनंदजी तथा पूरा सत्संग परिवार रतनपर गाँव द्वारा शिक्षापत्री त्रिदिवसयी पारायण पार्षद श्री घनश्याम भगत के वक्ता पदसे हुई। गाँव में हर घर पर शिक्षापत्री देकर उसकी महिमा समझाया गया था। अंतिम दिन ईडर-टोरडा मंदिर के महंत शा. स्वा. सिध्धेश्वरदासजी अपने आगामी शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष का ''समैया'' की रुपरेखा बताये थे। यहाँ ईडर प्रदेश के गाँवो में ''समैया'' के अवसर पर सत्संग सभाका आयोजन किये थे।

(१) रतनपर ता. १९-३-२०२५ से ता. २१-३-२५ (२) अरोडा ता. २६-३-२५ से २८-३-२५ (३) उमेदपुरा ता. १-३-२५ (४) फिचोड ता. ८-४ से १०-४-२५ (५) साचोदर ता. १४-४ से १५-४-२५ (६) बोलुन्द्रा ता. १७-४-२५ (७) देवगढ कंपा ता. १९-४-२५ (८) नाना कोटडा ता. २०-४-२५।

स.गु. महंत शा. स्वामी सिध्धेश्वरदासजी (टोरडा-ईडर) और पार्षद घनश्याम भगत आदि संत मंडल ईडर प्रदेश के गाँवो में ''समैया'' के उपलक्ष्य में सुंदर क्रिया कलाप किये । आने वाले दिनो में अनेक क्रिया-कलाप किया जायेगा।

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिध्धपुर द्वारा आगामी "समैया" के उपलक्ष्य में की गयी प्रवृत्तियाँ

स.गु. महंत शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी (सिध्धपुर-खाण महंतश्री) और संत मंडल द्वारा गाँवो में ''समैया'' के उपलक्ष्य में किये गये कार्य।

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिद्धपुर श्री हनुमान जयंती के अवसर पर तीन दिन की रात्रिय कथा-रास-गरबा अभिषेक दर्शन सिद्धपुर के बजरंगदल के भक्तो द्वारा

प्रत्येक गुरुवार कष्टभंजनदेव के आँगन में श्री हनुमान चालीसा, धुन, भजन, कीर्तन किया गया था।

श्री स्वामिनारायण मंदिर ऊँझा (पंचवटी) रात्रिय सत्संग सभा, कथावार्ता, धुन-भजन इसी प्रकार ब्राह्मणशेरी मंदिर में कथा-वार्ता, धुन-भजन कीर्तन किया गया।

श्री स्वामिनारायण मंदिर चाणस्मा, पाटण, मंडलोप, आदि मंदिरो में भजन-कीर्तन धुन सभा किया गया था।

विहार गेरिता देश के मंदिरो में वजापुर, विजापुर, भाणपुर, जेपुर, हाथीपुरा, सांकापुरा, रणछोडपुरा, धनपुरा, भीमपुरा आदि गाँवो में संत-हरिभक्त के साथ मिलकर धुन-भजन-कीर्तन कथा वार्ता करके हरिभक्तो को खुश किये थे।

आगामी दिनो में छोटे-बडे गाँवो में सत्संग के साथ सामाजिक प्रवृत्तियो का प्रबन्ध किया गया है।

बापुपुरा गाँव में "समैया" के उपलक्ष्य में प्रवृत्तियाँ

यहाँ के गाँव में समैया के उपलक्ष्य में पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. शा. स्वामी अजयप्रकाशदासजी (माणसा महंतश्री) के मार्गदर्शन से श्री रामनवमी एवम् श्री घनश्याम जन्मोत्सव ता. ६-४-२५ चैत्र सुद-८ परिवार महापूजा एवम् यज्ञ, दोपहर १२ बजे श्रीराम जन्मोत्सव आऱती पूजन रात में ८ से १० सत्संग कीर्तन सभा रात १०-१० श्री घनश्याम जन्मोत्सव आरती। गांव में ९ से १२ तक पक्षीघर का वितरण किया गया। बापुपुरा मंदिर के कोठारी विपुलभाई अमृतभाई चौधरी और गाँव के सभी हरिभक्तो ने समैया के उपलक्ष्य में आस-पास के गाँव भी अनेक प्रकार की प्रवृत्तियो का आयोजन किये थे। गाँव के प्रत्येक घर में महामंत्रलेखन नोटबुक का वितरण किया गया था।

प.भ. डॉ. जयेशभाई अपने डाक्टर की प्रैक्टिस मे से समय का दान देकर अच्छे कार्य किये। अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजीने ''समैया'' के उपलक्ष्य में प्रवृत्ति की गयी थी। बाल मंडल ने श्रद्धाकार्य किये थे।

गोता विस्तार में "समैया" के उपलक्ष्य में सत्संग सभा

शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष के समैया के उपलक्ष्य में गोता, शायोना वंदे मातरम विस्तार में सर्व प्रथम यहाँ के सत्संग सभा का अच्छा आयोजन ता. ५-४-२५ के दिन रात्रि में ८ बजे से ११ के मध्य हुआ था। इस सभा के अवसर पर अहमदाबाद मंदिर से पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, स.गु. महंत शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारणघाट), भंडारी स्वामी आदि संत पार्षद मंडल कथा, वार्ता, धुन, भजन, कीर्तन करके अपने आने वाले महामहोत्सव ''समैया'' की रुप रेखा के साथ सूचना दी। पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से इस सभा का प्रबन्ध किया गया था। जिसें ५०० हरिभक्तो ने लाभ लेकर जीवन धन्य बनाये। प्रत्येक हरिभक्त के लिये सुंदर फलाहार की व्यवस्था की गई थी।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - लुणावाडा द्वारा "समैया" के अवसर पर सत्संग सभा

तारीख १२-४-२५ शनिवार हाथपालिका गांव में सत्संग सभा, ता. १३-४-२५ रविवार को लाडपुर गाँव में सत्संग सभा, तारीख १४-४-२०२५ सोमवार के दिन दीवड कालोनी में सत्संग सभा, १५-४-२६ मंगलवार के दिन (शांतिनगर-लूणावाडा) प.भ. दुष्यंतभाई के घर सत्संग सभा, तारीख १९-४-२५ शनिवार के दिन शहेरा गाँव में सत्संग सभा (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - लुणावाडा)

॥ मंदिर ॥

शांतिग्राम (अदाणी)

मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव तथा उसके अर्न्तगत सारे कार्यक्रमो को गर्मी के कारण स्थगित किया गया है। बाद की तारीख कुछ दिनो में बतायी जायेगी।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीराम नवमी की समैया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से चैत्र सुद-९ श्रीहरि प्रगट्योत्सव के दिन प्रातः ६-३० बजे अक्षरभवन में विराजमान बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा षोडशोपचार के साथ अच्छे से पूरा किया गया । पाटोत्सव के यजमान अ.नि. वल्लभभाई भूराभाई नसित, अ.नि. दिवालीबेन वल्लभभाई नसित, ह. प.भ. प्रवीणभाई वी. नसित, प.भ. नरसिंहभाई नसित, रेखाबेन वी. नसित, प्रभाबेन एन. नसित, चि. नील, मौलिक (अहमदाबाद) आदि परिवार का प.पू. लालजी महाराजश्रीने सम्मान करके आशीर्वाद दिये थे ।

प्रसादी के सभा मंडप में प्रत्येक वर्ष की तरह प्रातः ६ से शायं ६ बजे तक अखंड श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून का सुभारम्भ प.पू. लालजी महाराज के करकमलो द्वारा किया गया था । सुंदर सजावट, सभा मंडप में संत-हरिभक्तो ने धुन को वाजिंत्रा, तबला, ढोल के साथ प्रस्तुत किये थे । चौक को मंडप आदि को सजाया गया था । यहाँ पर बहनो ने १२ घंटे तक श्रीहरि के नाम के स्मरम की धून की थी । छोटे बच्चे, युवक, वृद्ध हरिभक्त, धून में भाग लिये थे । संत बैठकर १२ धंटे तक धून किये थे । पू. महंत स्वामी अनेक प्रवृत्ति के मध्य हरिभक्तो का उत्साह बढाने के लिये धून में बैठ गये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री धून का लाब लेने पधारे थे । दोपहर १२ बजे मंदिर में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्रजी भगवान के जन्मोत्सव की आरती करने पधारे थे ।

पू. महंत स्वामी सभी दर्शनार्थियो के लिये सुंदर फलाहार की व्यवस्था किये थे । छाश, तरबूच, ठंडाजल आदि प्राप्त करके लोग तृप्त हुए । शायं ६ बजे सभा मंडप में आज के धुन के यजमान प.भ. विनोदभाई धनजी पटेल (मणीपुरावाले) वर्त. रोनक, रवि (आर्जव-सार) आदि परिवार का पू. महंत स्वामीने ठाकुरजी के पुष्पहार पहनाकर सम्मानित किये थे। सभा को सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध वक्ता कथाकार पू. राम स्वामी, पू. महंत स्वामी आदि संत आने वाले ''समैया'' की विस्तृत सूचना सभी को दी ।

पूरे अवसर का संचालन तथा समैया का प्रबन्ध पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन के अनुसार हमारे नवयुवक कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजीने अच्छे से पूर्ण किये । धून पूर्णाहुति की आरती संत, यजमान परिवार के साथ रहकर किये थे । धून में शहर तथा पराक्षेत्र के मंडलने भाग लिये थे । संगीत की टीम ने आज महाराज को खुश करने में कोई कसर नही छोडे थे। रात ८ से १० के मध्य चौक की रोशनी के मध्य प.पू. लालजी महाराजश्री और बहनो के विभाग में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के सानिध्य में रास गरबा धून करके युवा कलाकार श्री वृषभ आहिर और उसकी टीम सभी को आनंदित किया । रात्रि १०-१० पर श्री घनश्याम जन्मोत्सव आरती प.पू. लालजी महाराजश्री उतारकर हजारो दर्शनार्थी को अलौकिक सुख दिये । जन्मोत्सव के यजमान प.भ. रसिकभाई राजाभाई झवेरी (जानगरवाले) यहाँ अलौकिक लाभ लिये ।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर - पूनम सभा श्री गणपतिजी - श्री हनुमानजी महाराज का पुनः प्राण प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प्रति पूनम धर्मकुल के आभार से भव्य सत्संग सभा का आयोजन था । चैत्र पूर्णिमा ता. १२-४-२०२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में स.गु. शास्त्री स्वामी सुव्रतस्वरुपदासजी के द्वारा सुंदर कथा मृत का पान करवाया गया । प.पू. लालजी महाराजश्री ने पूरे सभा को आशीर्वाद दिये ।

श्री हनुमान जयंती के अवसर पर अहमदाबाद मंदिर में विराजमान श्री गणपतिजी और श्री हनुमानजी की मूर्ति के स्वरुप कलर, चांदी सिंहासन दरवाजा जाली आदि का रिनोवेशन विगत ४ माह से चल रहा था । जो पूर्ण होते ही मारुती यज्ञ का सुंदर प्रबन्ध किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा दोनो देवो की पुनः प्राण प्रतिष्ठा विधिवत रुप से पूर्ण हुई । पूजारी पार्षद बाबु भगत ने सुंदर सेवा दिये थे ।

पूनम की सभा का संचालन पू. स.गु. कोठारी शास्त्री

स्वामी नारायणमुनिदासजीने किया था । श्री हनुमानजी, श्री गणपतिजी महाराज का सिंहासन आदि का पुन: रिनोवेशन का कार्य पू. महंत स्वामी के सीधे देख-रेख में पूरा हुआ था । (कोठारी स्वामी)

धमासणा गाँव के बच्चो की धमाशणा से आदरज पदयात्रा

प.पू. लालजी महाराजश्री की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव देश के गाँवो के बालमंडल वेकेशन मे धार्मिक-क्रिया कलाप अच्छे रस ले रहे है । अभी धमासणा गाँव से बालको द्वारा प्रसादी वाले आदरज गाँव में पैदल दर्शन हेतु गये थे । आदरज मंदिर के पू. रामकृष्णदासजी स्वामीने बालको को रस हो बाल घनश्याम की लीला सुनाकर प्रसाद दिये थे ।

आप भी अपने गांव में छुट्टी के समय बालको मे विशेष प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करके फोटो के साथ सूचना आप श्री स्वामिनारायण अंक मे भेजे । ऐसी प.पू. लालजी महाराजश्री की विशेष सूचना है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, बायड स्टेशन पुनः मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू.स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा-मार्गदर्शन में तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) के अच्वे प्रबन्ध से बायड स्टेशन मंदिर मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. १४-४-२०२५ से ता. १८-४-२०२५ के मध्य श्रीमद् भागवत दशम स्कंध पंचान्ह पारायण पू. स.गु. शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी (बावला महंतश्री) के वक्ता पद से बायड स्टेशन के सभी हरिभक्त कथा सुनकर धन्यता अनुभव किये ।

ता. १८-४-२५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा निज मंदिर में पुनः प्राण प्रतिष्ठा विधिरुप से पूर्ण हुआ ।

इसके बाद सभा में विराजमान होकर आशीर्वाद दिये थे । पूरे गाँव के हरिभक्त तन, मन और धन से सेवा दिये थे ।

सभा का सुंदर संचालन शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी (नारणपुरा मंदिर)ने शोभा बढाये थे । (शा.स्वा. भक्तिनंदासजी - बावला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वरनगर नरोडा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू.स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा तथा स.गु. स्वामी बलदेवप्रसाददासजी और स.गु. स्वामी हरिजीवनदासजी के अच्छे प्रबन्ध से तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) के सुंदर मार्गदर्शन से ता. ६-४-२०२५ रविवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर आदिश्वरनगर नरोडा में जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में २०० घंटे की महामंत्र धून प्रारम्भ के अवसर पर जेतलपुरधाम से जनमंगल स्वामी आदि संत मंडल कथा वार्ता का लाभ दिये थे । हरिभक्तो को खुश किये । यहाँ का घनश्याम मंडल बाल लीला की सुंदर वार्ता किये थे । (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - आदिश्वनरगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा गाम (जेतलपुरधाम)

जेतलपुरनिवासी बलियादेव श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू.स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्वे प्रबन्ध से श्री स्वामिनारायण मंदिर नवागाम का वार्षिक पाटोत्सव ता. ११-४-२०२५ के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर जेतलपुरधाम से पू. स.गु. स्वामी श्यामचरणदासजी, पू. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, महेसाणा, नारणपुरा मंदिर के महंत स्वामी आदि संत पधारकर कथा वार्ता करके ठाकुरजी की आरती उतारे थे । संत जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में २०० घंटे का महामंत्र धुन करने के लिये हरिभक्तो को सूचित थे ।(साधु जनमंगलदास - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू.स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) की प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के अच्छे प्रबन्ध से और बालासिनोर के पूरे हरिभक्तो के साथ-सहकार से श्री स्वामिनारायण मंदिर के १० वे पाटोत्सव को ता. २६-३-२०२६ के दिन उल्लास पूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर जेतलपुरधाम के संत, ब्रह्मचारी

संत आदि पधारकर कथा वार्ता करके जेतलपुरधाम मे द्विशताब्दी महोत्सव की जाहेरात की गयी थी । (साधु जनमंगलदास - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुरा (बोरवालु)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम में प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष पद से मनाई जाने वाली द्विशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में मणीपुरा (बोरवालु) गाँव में ता. २३-३-२०२५ के दिन २०० घंटे का महामंत्र धून की पूर्णाहुति के अवसर पर जेतलपुरधाम से पू.स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, ब्रह्मचारी स्वामी हरिस्वरुपानंदजी, स.गु. महंत कृष्णप्रकाशदासजी आदि संत पधारकर कथावार्ता धून की तथा पूर्णाहुति की आरती उतारे थे । (साधु जनमंगलदास - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू.स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल के ११४ वे वार्षिक पाटोत्सव को ता. ७-४-२५ के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर जेतलपुरधाम से पू. वृद्द संत श्री श्याम स्वामी, पू. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी, पू. महंत शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी (बावला), स.गु. महंत श्री विश्वप्रकाशदासजी (नारणपुरा) आदि संत-पार्षद मंडल पधारकर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारे, कथा-वार्ता करके हरिभक्तो को खुश किये । संतोने जेतलपुरधाम की द्विशताब्दी के कार्यक्रम की रुपरेखा समझाये थे ।(कोठारीश्री मांडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, पू.स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के सुंदर आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा के १३० वे वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में स.गु. शा.स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी (बिलिया) के वक्तापद से जेतलपुरधाम की महिमा कथा की गयी । इस अवसरपर जेतलपुरधाम से पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी, ब्र. शा. स्वामी हरिस्वरुपानंदजी आदि संत मंडल पधारकर जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के पूर्व आयोजन की रुप रेखा समझाये थे । (साधु जनमंगलदास - जेतलपुरदाम)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगध्रा (हलवद रोड) (बहनो के) ५ वे वार्षिक पाटोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की कृपा-प्रेरणा से तथा बहनो के मंदिर मे सेवा पूजा करती पू. सां. कंचनबा आदि सांख्ययोगी बहनो के सुंदर प्रयास से धांगध्रा बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर का ५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. २३-३-२०२५ के दिन उल्लासपूर्वक मनाया गया । सांख्ययोगी बहनो ने २७ वचनामृत पारायण, बाल चरित्र पारायण, ५०० घंटे का महामंत्र धून आदि धार्मिक क्रियो ''समैया'' के उपलक्ष्य में किये थे । ठाकुरजी का सुंदर अन्नकूट रखा गया था । सब दर्शन करके खुश हुए । इस अवसर पर हलवद ऊँझा मंदिर से सांख्ययोगी बहने पधारी थी ।(प्रति अनिल दूधरेजिया)

विदेश सत्संग समाचार

"समैया" के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर सिडनी (ब्लेक टाउन-आई.एस.एस.ओ.) का २० वाँ पाटोत्सव-महोत्सव

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री के आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा तथा सिडनी के समस्त हरिभक्त के सहयोग से सिडनी (ब्लेक टाउन) (आई.एस.एस.ओ.) मंदिर में ठाकुरजी बिराजे देखते-देखते २० वर्ष बीत गये । छोटे वृक्ष और बडा वृक्ष बन गया है । प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. आचार्यम हाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, बहनो के सत्संग के लिये प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बडे गादीवालाश्री आस्ट्रेलिया में सत्संग का प्रारम्भ हुई । तब से पूरे धर्मकुल और अपने सभी संत प्रत्येक वर्ष सत्संग की भविष्य वाली पीढी के कल्याण हेतु प्रयत्न करते रहे है । वहाँ से कोई वहाँ फं डनही लाया । प.पू. महाराजश्री और धर्मकुल तो इसे मानता ही नही है । विदेश के हरिभक्त अपने मंदिर और सत्संग के

विकास के लिये उसका फंड प्रयोग करते है । अपने श्री नरनारायणदेव देश (आई.एस.एस.ओ.) के विदेश में सैंकडो मंदिर है। और नये प्रतिवर्ष तैयार हो रहे है।

ता. १९-४-२०२५ से ता. २१-४-२०२५ तक सिडनी मंदिर मे पूरे धर्मकुल के सानिध्य में और पू. संतो की उपस्थिति में सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार पू. स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्तापद से वनविचरण ग्रंथ में से कथा संगीत के अलौकिक सुर से सिडनी के हजारो कथा प्रेमियो ने कथा सुनकर भाव विभोर हो गये थे।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री ने अन्तिम दिन पूर्णाहुति पर निज मंदिर में ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक अपने करकमलो द्वारा अन्नकूट की आरती उतारे थे। इस के बाद सभा में विराजकर दोनो श्रीहरि के स्वरुप ने आशीर्वाद दिया था । बहनो के सत्संग का पोषण देने के लिये उनका उत्साह बढाने प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री और पूज्य श्रीराजा सिडनी के अपने दोनो मंदिर (ब्लेक टाउन और किग्सपार्क मंदिर समस्त धर्मकुल पधारकर हरिभक्तो को आशीर्वाद देकर खुश किये।

यहाँ के संत मंडल में से मंदिर के पू. महंत स्वामी पूज्य शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी, पू. ब्रह्मचारी स्वामी रामेश्वरानंदजी, पू. स.गु. पू. महंत स्वामी सिध्धेश्वरदासजी (ईडर-टोरडा), पू. शा. स्वा. वासुदेवचरणदासजी (पोरडा), श्रीजी स्वामी, धर्मकुल के हजुरी पार्षद श्री वनराज भगत, श्री शैलेष भगत आदि संत मंडल पार्षद बडी संख्या में पधारे थे । सिडनी से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल पार्षद के साथ ता. २१-४-२०२५ को शायं पर्थ अपने मंदिर में पधारे थे। वहाँ से २ दिन सत्संग सभा में लाभ देकर सभी को आशीर्वाद दिये। ''समैया'' उत्सव में सभी को पधारने के लिये सूचना दिये । पुनः सत्संग का पोषण करके स्वदेश आ गये।

अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की सिडनी (ब्लैक टाउन) मंदिर के २० वर्ष के पाटोत्सव अवसर पर पधारना

अपने श्री नरनारायणदेव के भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री ता. १८-४-२०२५ से २१-४-२०२५ तक आस्ट्रेलिया के सिडनी (ब्लैक टाउन) मंदिर के २० वे पाटोत्सव के अवसर पर पधारे थे । निज मंदिर में कथा पारायण में विराजकर कथा-श्रवण करके मंदिर में ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट आरती करके लगातार तीन दिन युवा हरिभक्तो के साथ सत्संग का पोषण और भविष्य की पीढी सुरक्षित रखने के लिये अनेक सुझाव दिये। समैया में सभी को पधारने की सूचना देकर सभी को खुश किये।

आस्ट्रेलिया में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का आगमन

प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, पू. श्रीराजा, सां. गीताबा, सां. मधुबा आदि बहनो के साथ सिडनी (दोनो) मंदिर में बहनो को दर्शन देने के लिये ठाकुरजी के २० वे वाटोत्सव के अवसर पर ता. १८-४-२०२५ से ता. २१-४-२०२५ के मध्य पधारे थे। सिडनी (ब्लैक टाउन) मंदिर में २० वाँ पाटोत्सव के अवसर पर बहनो को दर्शन-आशीर्वाद का सुख देकर अपने सिडनी किंग्स पार्क मंदिर में बहनो को दर्शन आशीर्वाद देकर ता. २२-४-२०२५ के दिन मेलबोर्न के अपने मंदिरो बोरोनिया, डेरीमेट, के.सी. में पधारकर बहनो की सभा को आशीर्वाद दी। बहनो के सत्संग को पल्लवित करके ता. २४-४-२०२५ के दिन एडिलेड गयी । तथा अपने मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारी थी। बहनो को आशीर्वाद दी थी। ता. २५-४-२०२५ से २६-४-२०२५ तक पर्थ में अपने मंदिर में दो दिन सत्संग सभा ठाकुरजी की आरती करके सभी बहनो मे नरनारायणदेव के प्रति लगातार निष्ठा बढे ऐसा आशीर्वाद दिये थे। बहनो के उपर खुश हुई । आस्ट्रेलिया के प्रत्येक स्टेट में स्थित मंदिर में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री ने बहनो को एक सप्ताह तक अविरत सत्संग का अलौकिक सुख दी । सभी को ''समैया'' मे भाग लेने हेतु आमंत्रण भी दी। पुनः स्वदेश वापस पधारी।

श्री स्वामिनारायण मंदिर रालेनार्थ केरोलिना (अमेरिका)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर मंदिर) की प्रेरणा मार्गदर्शन मे यहाँ राले में श्री स्वामिनारायण मंदिर में वर्ष के मध्य आने वाले अपने उत्सवो संत-हरिभक्तो द्वारा उल्लास पूर्वक मनाया जाता है।

फाल्गुन सुद-१५ ता. १५ मार्च २०२५ श्री नरनारायणदेव प्रगट्योत्सव, फूलदोलोत्सव, रंगोत्सव, होलिका दहन, के अवसर पर ठाकुरजी को हरिभक्तो द्वारा निर्मित फूलो का वाधा संतो पहनाकर दर्शन कराये थे। यहाँ के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी विश्वविहारीदासजी धून-कथा-कीर्तन, ठाकुरजी का थाल-आरती पूरे भाव से श्रद्धा प्रेम-स्नेहपूर्वक करके भगवान को खुश रखते है। पू. शास्त्री स्वामी स.गु. माधवदासजी स्वामी कृत श्रीहरिचरित्रामृत सागर की कथा करके हरिभक्तो को भक्तिमय बनाये । स्वामी की प्रेरणा से हरिभक्त प्रसंगोपात उत्सव के यजमान बनकर सेवा दिये। श्री स्वामिनारायण मंदिर राले का ८ वाँ पाटोत्सव ३० से २१ जून के दिन भव्य रुप से मनायेगे। (जिज्ञेशभाई शेलत)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

माघ सुद-३ प.भ.अ.नि. मेनाबेन डाह्याभाई चौधरी (ईश्वरपुरा), प.भ.अ.नि. चिरागभाई दशरथभाई महेता (अहमदाबाद)। **माघ सुद-४/५** प.भ. नवीनभाई ईश्वरभाई पटेल (नरोडा), अ.नि. स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी (अहमदाबाद), प.भ. शांताबेन शिवरामभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हेत जयेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मित पटेल (अहमदाबाद), प.भ. केशवभाई के. पटेल परिवार (अहमदाबाद)। **माघ सुद-६** प.भ.अ.नि. खीमजी करशनभाई (केरा-कच्छ), प.भ. योगेश हसमुखभाई चांदपरा (गांधीनगर)। **माघ सुद-७** प.भ. डी. एम. वेकरीया (अहमदाबाद), प.भ. रामभाई गांडाभाई पटेल (पोर), प.भ. युग मिरल पटेल (अहमदाबाद)। **माघ सुद-८** प.भ. पुष्पाबेन बाबुलाल पटेल (वडुवाला)। **माघ सुद-९** प.भ. अश्विन नवनीतलाल शाह (मुंबई)। **माघ सुद-१०** प.भ. कौशल महेशभाई पटेल (अडालज), प.भ. विनोदभाई परसोतमदास पटेल (सोजा), प.भ. बालकृष्ण नवीनभाई पटेल (अहमदाबाद)। **माघ सुद-११** प.भ. मुकेशभाई धरमाभाई पटेल (डांगरवा)। **माघ सुद-१२** प.भ. नारणभाई पशाभाई पटेल (पिलुदरा), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. मौलिक रमेशकुमार सोनी (अहमदाबाद), प.भ. क्रिष्णाबेन जयप्रकाश पटेल (करजीसण), प.भ. रमेशभाई रणछोडभाई मारफतीया (अमेरिका), प.भ. मननकुमार संतोषभाई चौधरी (माणेकपुर), स.गु. स्वामी देवप्रसाददासजी (माणेकपुर), प.भ. ध्रुवित राजेशकुमार पटेल (सापावाडा), प.भ. सन्नी विष्णुभाई अने विरेश पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रसिकभाई भीमजीभाई मकवाणा (अहमदाबाद), प.भ. शैलेषभाई भावसार (सरसपुर), प.भ.अ.नि. हर्षदराय महेता। **माघ सुद-१३** प.भ. भीखाभाई प्रभुदास पटेल (पीलुदरा), प.भ. देव-मीत प्रकाशभाई पटेल (गवाडा)। **माघ सुद-१४** प.भ. वालजी करशन हिराणी (कच्छ-भुज), प.भ. बलदेवभाई महोतभाई चौधरी (बालवा)। **माघ सुद-१५** प.भ. रतनबेन रामजी गोरसीया (माधापर-कच्छ), (पूनम यजमान) प.भ.अ.नि. घनश्यामभाई नारणदास पटेल (राजपुरवाला), प.भ. जीगर अशोककुमार जे. पटेल (डांगरवा), प.भ. अमी कौशिककुमार वाघाणी (अहमदाबाद)।

माघवद-१ प.भ.अ.नि. गीताबेन अरविंदभाई पटेल (अहमदाबाद)। **माघ वद-२** प.भ. जीयान हर्षदभाई पटेल (लसुन्द्रा), प.भ. भाविकाबेन मनीषभाई वरसाणी, प.भ. मणीबेन प्रविणकुमार चौधरी (ईन्द्रपुरा), प.भ. कमलेशभाई (बायड)। **माघ वद-३** प.भ. प्रविणभाई छनालाल भावसार (अहमदाबाद), प.भ. रंजनबेन - मीनाबेन - पुनीताबेन (अहमदाबाद), प.भ. पार्थ मनसुखभाई बुहा (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. राजुभाई नारणभाई पटेल (शिलज), प.भ. विनुभाई गोविंदभाई पटेल (धमासणा)। **माघ वद-४** प.भ. अजयभाई अरविंदभाई प्रजापति (लग्न प्रसंगे) (शियाल), प.भ. हसुमतीबेन अरविंदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. घनश्यामभाई शंभुभाई दावरा (अहमदाबाद), प.भ. शैलेषभाई गांडालाल पटेल (घुमासण), प.भ. भाविक जे. शाह (अहमदाबाद), प.भ. शामलदास भीमजीभाई मोरडीया (अहमदाबाद), प.भ. मधुसुदन एम. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मोहनभाई के. काचा (अहमदाबाद), प.भ. गोविंदभाई केशाभाई पटेल (सरखेज)। **माघ वद-५** प.भ. धीरेनभाई रादडीया (निकोल)। **माघ वद-६** प.भ. राजेशभाई धोलकिया (अहमदाबाद)। **माघ वद-७** प.भ. श्रीनिध्धि परेशभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. सुरेखाबेन भरतभाई कांतिभाई पटेल (कडी), प.भ.अ.नि. जयंतीभाई सांकलचंद (अहमदाबाद)। **माघ वद-८** प.भ. चेतनाबेन पटेल (अहमदाबाद), प.भ. चेतनभाई एन. पटेल (झुंडाल), प.भ. संजयकुमार रसिकभाई पटेल (शिलज), गं.स्व. शारदाबेन चंदुलाल पटेल (कुकरवाडा), प.भ. रतनबेन मनजी केराई, मनजी देवजी केराई (रामपरवेकरा-कच्छ)। **माघ वद-९** प.भ.अ.नि. अरजणभाई कुरजीभाई (अहमदाबाद), प.भ. अवध सुरेशभाई पटेल (चांदीसणा)। **माघ वद-११** प.भ. रविभाई कौशिकभाई ठक्कर (बावला), प.भ. मंजुलाबेन नानजीभाई हयाणी (निकोल), प.भ. प्रज्ञाबेन प्रकाशकुमार भावसार (महेसाणा), चि. तमन्ना करशनभाई परमार (टींबा-अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. चंपाबेन नारणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. हरिलाल मावजीभाई चोटलीया (सुरत), प.भ. मेहुलभाई आंबाभाई पोकीया (रणासण), प.भ. आकाश हरेशभाई मोदी (अहमदाबाद), प.भ. धर्मेश प्रविणभाई भालाला (बापुनगर), प.भ.अ.नि. प्रभुभाई राणाभाई सोलंकी (वणी), प.भ. रिंकेश राजेशकुमार पटेल (कालीगाम)। **माघ वद-११** प.भ. मीनाबेन अशोकभाई शामजीभाई (कणजरीया-मेमका)। **माघ वद-१२** प.भ.अ.नि. बाबुभाई भालीया (दुधाला-अहमदाबाद), हरिॐ परिवार प.भ. शैलेषभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. धमबाई धनजी हरसीयाणी (केरा-कच्छ), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ)। **माघ वद-१३** प.भ.अ.नि. कंकुबेन सोमाभाई पटेल (चांदखेडा)। **माघ वद-१४/३०** प.भ. घनश्यामभाई ठक्कर (गांधीधाम-कच्छ), प.भ. अनेरी विराजभाई पटेल (राजपुर-कडी), प.भ. मनुभाई पी. मालवीया (माचीयाला), प.भ. अल्काबेन पोरसकुमार पटेल (अहमदाबाद)।

अक्षरवास

वाली (राजस्थान-मारवाड) श्री स्वामिनारायण मंदिर के वयोवृध्ध संत स.गु. स्वामी देवप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी नारायणप्रियदासजी (उ. ९० वर्ष) ता. १६-४-२०२५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है। उनके अक्षरवास से मारवाड को बडी कमी हुई है।

बामरोली (मध्यप्रदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर के संत स.गु. स्वामी हरिकेशवदासजी गुरु स.गु. स्वा. मुकुन्दप्रसाददासजी (भुजवाला) ता. १७-४-२०२५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

आई.एस.एस.ओ. सीडनी ब्लेक टाउन (आस्ट्रेलिया) मंदिर के २० वे पाटोत्सव के अवसर का दर्शन।

पर्थ (ओस्ट्रेलीया) मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. महाराजश्री।

गौ सेवा

सभी हरिभक्तो को ज्ञात हो कि अपने श्री नरनारायणदेव देश पीठस्थान द्वारा संचालित गौ-शाला पालज (जि. गांधीनगर) में शुरु किया गया है। वर्तमान में ४० गौ माता है।

देश-विदेश के हरिभक्त गाय के देख रेख के लिये दान देने की ईच्छा रखते हो उन्हे कालुपुर मंदिर कोठार कार्यालय में दान देकर रसीद अवश्य प्राप्त करे।

- आज्ञा स

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

गजोड-लेर (कच्छ) मे गोरसिया फाउन्डेशन द्वारा चलायी जाने वाली गौशाला की मुलाकात के पश्चायात।
तब वहाँ के भोले-भाले मालधारियो को आत्मीय भाव से मिले अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री।

खोलडियाद (मूली प्रदेश) बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते और सभा को आशीर्वाद देते प.पू. महाराजश्री।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से

शिक्षापत्री लेखन के २०० वर्ष का

समैयो

23-1-2026 - 27-1-2026

स्थल :

''पर्व'' ग्राउन्ड, श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर के बगल मे,
जमीयतपुरा, अहमदाबाद।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, अमदावाद

जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्सव

ता. ५-३-२०२६ थी
ता. ११-३-२०२६

अध्यक्ष : प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

Praful Kharsani